

हरिभूमि भिवानी-दादरी भूमि

रोहतक, रविवार, 18 मई 2025

11 पाकिस्तान ने फिर से आतंकी हरकत की तो मुंहतोड़ ...



12 पानी पर तकरार, पब्लिक हेल्थ ने रोके ...



जे.बी. गुप्ता हस्पताल



चिड़ियाघर मोड़, भिवानी

20 वर्षों से आपकी सेवा में

24x7 ADVANCED ICU

(LEVEL II) &

DIALYSIS SERVICES AVAILABLE



Dr Albee Gupta

MBBS, MD MEDICINE

S/o Late DR. J.B. GUPTA

MBBS, MD MEDICINE

Founder (J.B. Gupta's Hospital)



Dr Mandeep

MBBS, MD, DM

HOD (TRAUMA & CRITICAL CARE)

ICU SPECIALIST



CRITICAL CARE CONSULTANTS



Dr Udit Anand Gupta

MBBS, MD Anaesthesia

ICU Specialist



Dr Richa Arora

MBBS, MD Anaesthesia

ICU Specialist



Dr Sandeep Rathore

DNB, Medicine



Dr Manjot Benipal

MD, Medicine



Dr Pawan Goel

MBBS, MD, DM

ENDOCRINOLOGY (SGPGI)

शुगर, मोटापा, थायरॉइड,
पी.सी.ओ.डी और प्रोलैक्टिन से
जुड़ी समस्याओं की ओ.पी.डी.

हर शनिवार को

OPD TIME 10 AM to 5 PM

विशेषज्ञता का क्षेत्र

- DIALYSIS
- आपतकालीन देखभाल
- पुनर्वीजन और ACLS
- स्पर्शसंचारी बिमारियां
- वेंटीलेटर प्रबंध
- POCUS 2D ECHO
- जहर खाये का इलाज
- सांप द्वारा काटने का इलाज
- स्रे पीये हुए का इलाज
- Hanging Electric Shock
- Anesthesia Services
- Trauma Management

अत्याधुनिक बुनियादी ढांचा

आपातकालीन स्थिति के लिए

विशेषज्ञ एवं समर्पित स्टाफ

हरियाणा सरकार के कर्मचारी,
पेंशनर्स व उनके आश्रित

ECHS (भूतपूर्व सैनिक)

आयुष्मान भारत के पैनेल पर

TPA सुविधा उपलब्ध



- निमोनिया
- दमा
- थायरॉइड
- मलेरिया
- मोतिझारा
- चिकन गुनिया
- डेंगू
- टाईफाइड
- शुगर
- पीलिया
- बुखार
- पेट दर्द
- उल्टी दस्त
- सांस फूलना
- दिमागी बुखार
- छाती में दर्द होना
- फेफड़ों में पानी भरना
- दिल की धड़कन बढ़ना
- जहर खाये मरीजों का इलाज
- खून की कमी
- पेट में पानी भरना
- घबराहट होना
- 24 घण्टे इमरजेंसी सुविधा उपलब्ध
- हृदय से संबंधित सभी बिमारियों की जांच सुविधा व इलाज

OPD TIME : 9.00 AM to 2:00 PM | 5:00 PM to 8:00 PM

9:00 AM to 2:00 PM (Sunday) With Appointment Only

रजिस्ट्रेशन के लिए सम्पर्क करें:

M. 9215376262 **9350305590**

किसी शेयर को लंबे वक़्त तक होल्ड करना सबसे बड़ी मूल

- इससे आपने जो मुनाफ़ा कमाया है वह सुरक्षित रहेगा
- भविष्य में होने वाले नुक़सान से भी बचा जा सकेगा
- पोर्टफ़ालियो संतुलित रहेगा, निवेश को परेशानी नहीं
- और बेहतर मौक़ा मिले तो पैसा लगाने की स्वतंत्रता मिलेगी



लंबी-होल्डिंग के बाद भी मनचाहा रिटर्न नहीं तो बाहर निकलना सही

निवेश मंत्रा

बिजनेस डेस्क

अगर आप भी निवेशक हैं और अच्छा खासा पैसा निवेश कर रखा है। इसके बाद भी मनचाह रिटर्न नहीं मिल रहा है तो आपका निवेश से बाहर निकल जाना ही बेहतर है। इससे आपने जो मुनाफ़ा कमाया है वह सुरक्षित रहेगा और आपको भविष्य में मौक़ा मिले तो निवेश करने के लिए आपके पास लिक्विडिटी बनी रहेगी। हालांकि यह निर्णय कई कारकों पर निर्भर करता है, जैसे कि आपके निवेश लक्ष्य, जोखिम सहनशीलता, और बाजार की स्थिति। यदि आपने लंबी अवधि के लिए निवेश किया है और आपको लगता है कि आपका निवेश आपके लक्ष्यों को पूरा नहीं कर रहा है, तो आप कुछ विकल्पों पर विचार कर सकते हैं। आपको अपने निवेश का पुनः मूल्यांकन करना चाहिए और और देखें कि क्या आपको अपने निवेश को समायोजित करने की आवश्यकता है। अपने निवेश को विविध बनाना पर विचार करें ताकि आप अपने जोखिम को कम कर सकें। शेयर बाजार में सही एंज्री जितनी मायने रखती है, उतनी ही सही एग्जिट भी। रिटेल निवेशकों के लिए यह तय करना मुश्किल होता है कि शेयर से कब निकलें। इसका नतीजा यह होता है कि वे कई बार अच्छे मुनाफ़ा नहीं कमा पाते या नुक़सान उठा लेते हैं। इसलिए, जब भी किसी स्टॉक में निवेश करें, तो निकलने की रणनीति जरूर बनाएं। यह आपको सही समय पर प्रॉफ़िट बुक करने, नुक़सान को कम करने या किसी अन्य बेहतर अवसर पर ध्यान देने में मदद करेगा।



जरूरत से ज्यादा होल्ड अच्छी रणनीति नहीं

किसी शेयर को लंबे वक़्त तक होल्ड करना बड़ी मूल साबित हो सकती है, खासकर जब वह आपके लक्ष्यों से मटक गया हो। या लंबी होल्डिंग के बाद भी अपेक्षित रिटर्न नहीं मिल रहा है तो बाहर निकलना बेहतर रणनीति है। इसमें बने रहना उतना ही ख़तरनाक है, जितना किसी ग़लत शेयर में पैसा लगाना। एक सौची-समझी एग्जिट रणनीति मावनाओं को काबू रखती है।

- तय लक्ष्य हासिल करने पर**

अगर आपने किसी शेयर को खरीदते समय टारगेट तय किया है। वह पूरा हो गया है तो प्रॉफ़िट बुक करना अच्छा फैसला है। बिना किसी रणनीति के किसी शेयर में लंबे समय तक बने रहना सही नहीं है।
- फंडामेंटल्स या वित्तीय सेहत में गड़बड़ी**

कंपनी की वित्तीय सेहत पर नजर रखें। कई तिमाहियों में आय या मुनाफ़े में गिरावट है, कर्ज बढ़ रहा है, मैनेजमेंट में ऐसा बदलाव जो कंपनी के हित में नहीं है, कंपनी कानूनी या नियामकीय कार्रवाई के घेरे में आती है तो ऐसे निवेश से निकलने पर विचार करें।
- सेक्टर का ख़राब प्रदर्शन**

कभी-कभी, किसी शेयर के प्रदर्शन पर बाहरी फैक्टर हावी होते हैं। नीतियों में बदलाव, किसी खास सेक्टर का ख़राब प्रदर्शन और आर्थिक मंदी जैसे कारणों से शेयर पर असर पड़ सकता है। ऐसे में निकलने पर विचार करें।

- बिना वजह ओवरवैल्युएशन**

यदि कोई स्टॉक किसी वजह के अपने ऐतिहासिक औसत या समान कंपनियों से काफी ऊपर ट्रेड करता है तो भविष्य में करेक्शन आ सकता है। ऐसे में उससे बाहर निकलने या होल्डिंग कम करने पर विचार करना चाहिए।
- डर या लालच में फैसला न करें**

किसी शेयर में इसीलिए न बने रहें क्योंकि किसी परिचित या अन्य ने उसे होल्ड किया है। किसी शेयर को घाटे में भी इस उम्मीद में होल्ड करना कि कभी तो वह वापस उछलेगा, सही रणनीति नहीं है। किसी लालच या डर के बजाय फंडामेंटल पर ध्यान देना जरूरी है।
- पोर्टफोलियो की नियमित समीक्षा करें**

किसी शेयर से कब बाहर निकलना है, यह जानना आपके लॉन टर्म के निवेश परिणामों में सुधार कर सकता है। अपने पोर्टफोलियो की नियमित समीक्षा करें। वास्तविक लक्ष्य तय करें। कंपनी और बाजार के घटनाक्रम पर नजर

किसी शेयर को लंबे वक़्त तक होल्ड करना बड़ी मूल साबित हो सकती है, खासकर जब वह आपके लक्ष्यों से मटक गया हो या लंबी होल्डिंग के बाद भी अपेक्षित रिटर्न नहीं मिल रहा है तो बाहर निकलना बेहतर रणनीति है। इसमें बने रहना उतना ही ख़तरनाक है, जितना किसी ग़लत शेयर में पैसा लगाना। एक सौची-समझी एग्जिट रणनीति मावनाओं को काबू रखती है। ग़लत फैसले लेने से बचते हैं।

- यह भी रखें ध्यान**

निवेश लक्ष्य

यदि आपके निवेश लक्ष्य बदल गए हैं या आपको लगता है कि आपका वर्तमान निवेश उन लक्ष्यों को पूरा नहीं कर रहा है, तो आपको अपने निवेश को पुनः मूल्यांकन करने की आवश्यकता हो सकती है।
- जोखिम सहनशीलता**

यदि आप अपने निवेश में अधिक जोखिम नहीं उठा सकते हैं या आपको लगता है कि आपका वर्तमान निवेश आपके जोखिम सहनशीलता से अधिक जोखिम भरा है, तो आपको अपने निवेश को समायोजित करने की आवश्यकता हो सकती है।
- सहनशीलता**

बाजार की स्थिति भी एक महत्वपूर्ण कारक है। यदि बाजार में बदलाव आया है और आपको लगता है कि आपका निवेश अब उतना आकर्षक नहीं है, तो आपको अपने निवेश को पुनः मूल्यांकन करने की आवश्यकता हो सकती है।
- निवेश की गुणवत्ता**

यदि आपको लगता है कि आपका निवेश अब उतना मजबूत नहीं है जितना पहले था, तो आपको अपने निवेश को पुनः मूल्यांकन करने की आवश्यकता हो सकती है। तभी आप अपने निवेश का ध्यान रख पाएंगे।

बाजार में उतार-चढ़ाव के बीच ब्लूचिप फंड में निवेश करना सबसे कम रिस्की

- एक साल में दिया 16% तक रिटर्न और जोखिम भी न के बराबर
- लंबे समय तक एसआईपी के जरिए निवेश करना सबसे बेहतर
- ब्लूचिप फंड्स या लार्ज कैप फंड्स ने बेहतर रिटर्न दिया

बिजनेस डेस्क

अगर आप शेयर बाजार में निवेश करना चाहते हैं, लेकिन ज्यादा रिस्क नहीं लेना चाहते, तो ब्लूचिप फंड्स एक बेहतर विकल्प हो सकते हैं। एसआईपी के जरिए लंबी अवधि में निवेश करके आप सुरक्षित और अच्छा रिटर्न पा सकते हैं। पिछले कुछ महीनों में शेयर बाजार में उतार-चढ़ाव काफी देखने को मिला है। इस वजह से कई निवेशकों का पोर्टफोलियो नुक़सान में चला गया। हालांकि इसी बीच म्यूचुअल फंड की ब्लूचिप फंड्स या लार्ज कैप फंड्स ने बेहतर रिटर्न दिया है। पिछले एक साल में लार्ज कैप ने 16% तक का रिटर्न दिया है। लंबे समय तक सिस्टमैटिक इन्वेस्टमेंट (एसआईपी) के जरिए निवेश करके आप इस फंड में आप अच्छा रिटर्न बना सकते हैं। अंततः, ब्लूचिप फंड एक अच्छा निवेश विकल्प हो सकता है यदि आप लंबी अवधि के लिए निवेश करना चाहते हैं और कम जोखिम वाले निवेश विकल्प की तलाश में हैं। ब्लूचिप फंड्स को लार्ज कैप म्यूचुअल फंड्स भी कहा जाता है। ये ऐसे फंड होते हैं जो देश की टॉप 100 बड़ी कंपनियों में निवेश करते हैं। उदाहरण के तौर पर- एसबीआई ब्लूचिप फंड, आईसीआईसीआई प्रू ब्लूचिप फंड, एक्सिस ब्लूचिप फंड, कोटक ब्लूचिप फंड आदि। इन फंड्स को निचम के अनुसार अपनी 80% से ज्यादा राशि टॉप 100 कंपनियों में निवेश करनी होती है। बड़ी कंपनियों में निवेश होने के कारण इन्हें रिस्क कम होता है और लॉन टर्म में अच्छा रिटर्न मिलने की संभावना ज्यादा होती है।



- निवेश से पहले ध्यान दें**
1. फंड का पिछला प्रदर्शन देखें।
 2. फंड मैनेजर का अनुभव और रिकॉर्ड देखें।
 3. एक्सपेंस रेशियो (फीस) ज्यादा न हो।
- ब्लूचिप फंड के फायदे**
1. स्थिरता और कम जोखिम: ब्लूचिप फंड आमतौर पर कम जोखिम वाले निवेश विकल्प माने जाते हैं।
 2. लंबी अवधि में अच्छा रिटर्न: ब्लूचिप फंड लंबी अवधि में अच्छा रिटर्न प्रदान कर सकते हैं।
 3. पेशेवर प्रबंधन: ब्लूचिप फंड का प्रबंधन पेशेवर फंड प्रबंधकों द्वारा किया जाता है।
 4. बड़ी और स्थापित कंपनियों में निवेश: ब्लूचिप फंड बड़ी और स्थापित कंपनियों में निवेश करते हैं जो अपने उद्योग में अग्रणी होती हैं।
 5. स्थिरता और कम जोखिम: ब्लूचिप फंड आमतौर पर कम जोखिम वाले निवेश विकल्प माने जाते हैं क्योंकि वे बड़ी और स्थापित कंपनियों में निवेश करते हैं।
 6. लंबी अवधि के लिए उपयुक्त: ब्लूचिप फंड लंबी अवधि के लिए उपयुक्त होते हैं क्योंकि वे बाजार के उतार-चढ़ाव को सहन कर सकते हैं।
- उपयुक्त निवेशक**
- लंबी अवधि के निवेशक: ब्लूचिप फंड लंबी अवधि के निवेशकों के लिए उपयुक्त होते हैं।
 - कम जोखिम सहनशीलता वाले निवेशक: ब्लूचिप फंड कम जोखिम सहनशीलता वाले निवेशकों के लिए उपयुक्त होते हैं।
 - नियमित आय की तलाश में निवेशक: ब्लूचिप फंड नियमित आय की तलाश में निवेशकों के लिए उपयुक्त हो सकते हैं।
- डिस्क्लेमर : यहां मुख्य तौर पर शेयर बाजार की जानकारी दी गई है, निवेश की सलाह नहीं। इक्विटी मार्केट में जोखिम होता है, इसलिए निवेश अपने जोखिम पर करें। निवेश करने से पहले एक्सपर्ट की राय जरूर लें।*



कर की बात

बिजनेस डेस्क

वित्त वर्ष 2024-25 (आकलन वर्ष 2025-26) के लिए इनकम टैक्स रिटर्न (आईटीआर) दायित्व करने की प्रक्रिया में सरकार ने कुछ बड़े बदलाव किए हैं। खास तौर पर, अगर आपने शेयर बाजार या म्यूचुअल फंड से 1.25 लाख रुपये तक का लॉन्ग टर्म कैपिटल गेन (एलटीसीजी) कमाया है, तो आपके लिए रिटर्न फाइल करना अब पहले से कहीं ज्यादा आसान हो गया है। यह बदलाव छोटे निवेशकों और वेतनभोगी लोगों को ध्यान में रखकर किया गया है, ताकि उनकी टैक्स फाइलिंग प्रक्रिया सरल और कम जटिल हो। यहां हम समझेंगे कि ये नए नियम क्या हैं, ये कैसे काम करेंगे, और आपके लिए क्या फायदा होगा।

एलटीसीजी-आईटीआर : पहले क्या थी दिक्कत

पहले अगर किसी व्यक्ति को शेयर या इक्विटी म्यूचुअल फंड की बिक्री से लॉन्ग टर्म कैपिटल गेन मिलता था, तो उसे आईटीआर-2 या आईटीआर-3 जैसे जटिल फॉर्म भरने पड़ते थे। ये फॉर्म छोटे निवेशकों या वेतनभोगी लोगों के लिए मुश्किल हो सकते थे, क्योंकि इनमें कई तरह की वित्तीय जानकारी देनी होती थी। उदाहरण के लिए, अगर आपने शेयर बेचकर 50,000 रुपये का एलटीसीजी कमाया, तब भी आपको आईटीआर-1 जैसे सरल फॉर्म का इस्तेमाल नहीं करना पड़ता था। इससे टैक्स फाइलिंग में समय और मेहनत दोनों ज्यादा लगती थी। लेकिन अब इनकम टैक्स डिपार्टमेंट ने इस समस्या को समझते हुए नियमों में बदलाव किया है। नए नियमों के तहत, अगर आपका एलटीसीजी 1.25 लाख रुपये तक है, तो आप आईटीआर -1 (सहज) या आईटीआर -4 (सुगम) जैसे आसान फॉर्म का इस्तेमाल कर सकते हैं।

आईटीआर-1 और आईटीआर-4 में क्या बदला

इनकम टैक्स डिपार्टमेंट ने वित्त वर्ष 2024-25 के लिए आईटीआर-1 और आईटीआर-4 फॉर्म को अपडेट किया है। इन फॉर्मों को 29 अप्रैल 2025 को नोटिफाई किया गया था। अब इन फॉर्मों में 1.25 लाख रुपये तक के एलटीसीजी को शामिल करने का विकल्प जोड़ा गया है। इसका मतलब है कि अगर आपने लिस्टेड शेयर या इक्विटी म्यूचुअल फंड बेचकर 1.25 लाख रुपये तक का मुनाफा कमाया है, तो आपको अब आईटीआर-2 जैसे जटिल फॉर्म की जरूरत नहीं होगी।

आईटीआर-1, जिसे 'सहज' फॉर्म भी कहते हैं, उन लोगों के लिए है जिनकी कुल आय 50 लाख रुपये तक है और आय का स्रोत वेतन, एक मकान की संपत्ति, ब्याज, या 5,000 रुपये तक की कृषि आय है। अब इसमें एलटीसीजी को भी जोड़ा गया है, बशर्ते यह 1.25 लाख रुपये से ज्यादा न

शेयर बाजार से कमाया है मुनाफा 1.१5 लाख तक के एलटीसीजी पर आईटीआर फाइल करना आसान

अगर आप वेतनभोगी हैं, तो आपको आईटीआर फाइल करने से पहले फॉर्म 16 का इंतजार करना होगा। यह फॉर्म आपके एम्प्लॉयर द्वारा जारी किया जाता है, जिसमें आपकी सैलरी और उस पर काटे गए टैक्स (टीडीएस) की जानकारी होती है।

- हो। इसी तरह, आईटीआर-4, जिसे 'सुगम' फॉर्म कहते हैं, छोटे व्यापारियों और प्रोफेशनल्स के लिए है जो अनुमानित कर व्यवस्था का इस्तेमाल करते हैं। इस फॉर्म में भी अब एलटीसीजी की शामिल करने की सुविधा दी गई है।
- छोटे निवेशकों को कैसे मिलेगी राहत?**

ये बदलाव छोटे निवेशकों और वेतनभोगी लोगों के लिए बहुत फायदेमंद हैं। मान लीजिए, आप एक वेतनभोगी कर्मचारी हैं और आपने कुछ शेयर या म्यूचुअल फंड में निवेश किया था। अगर आपने इन्हें बेचकर 80,000 रुपये का एलटीसीजी कमाया, तो पहले आपको आईटीआर-2 भरना पड़ता था, जिसमें कई तरह की वित्तीय जानकारी देनी होती थी। लेकिन अब आप आईटीआर-1 का इस्तेमाल कर सकते हैं, जो बहुत सरल है और कम समय लेता है। यह बदलाव टैक्स फाइलिंग को छोटे निवेशकों के लिए कम बोझिल बनाता है। इससे लोग समय पर और सटीक तरीके से अपना रिटर्न दायित्व कर पाएंगे। खास बात यह है कि अगर आपका एलटीसीजी 1.25 लाख रुपये से कम है और आपके पास कोई कैपिटल लॉस नहीं है, जिसे सेट-ऑफ या कैरी फॉरवर्ड करना हो।
- हालांकि, कुछ लोग अब भी आईटीआर -1 या आईटीआर -4 का इस्तेमाल नहीं कर पाएंगे। उदाहरण के लिए, अगर आप किसी कंपनी के डायरेक्टर हैं, अनलिस्टेड शेयरों में निवेश करते हैं, या आपके पास विदेश में संपत्ति है, तो आपको आईटीआर -2 या अन्य फॉर्म भरने होंगे।
- टैक्स की दर और टूट : क्या है नियम?**

लॉन्ग टर्म कैपिटल गेन पर टैक्स की दर 12.5% है, लेकिन 1.25 लाख रुपये तक के एलटीसीजी पर कोई टैक्स नहीं लगता। इसका मतलब है कि अगर आपका एलटीसीजी इस सीमा के अंदर है, तो आपको इस पर कोई टैक्स नहीं देना होगा। यह छूट इनकम टैक्स अधिनियम की धारा 112A के तहत दी जाती है। अगर आपका एलटीसीजी 1.25 लाख रुपये से ज्यादा है, तो अतिरिक्त राशि पर 12.5% टैक्स देना होगा।
- सैलरीड क्लास के लिए फॉर्म 16 का इंतजार**

अगर आप वेतनभोगी हैं, तो आपको आईटीआर फाइल करने से पहले फॉर्म 16 का इंतजार करना होगा। यह फॉर्म आपके एम्प्लॉयर द्वारा जारी किया जाता है, जिसमें आपकी सैलरी और उस पर काटे गए टैक्स (टीडीएस) की जानकारी होती है। इनकम टैक्स नियमों के मुताबिक, एम्प्लॉयर्स को 15 जून 2025 तक फॉर्म 16 जारी करना जरूरी है। इसके बाद ही आप अपना रिटर्न फाइल कर सकते हैं।

बचत बिजनेस डेस्क

- लगातार बढ़ती आर्थिक अस्थिरता और शेयर बाजार के उतार-चढ़ाव में बीच भारत के लोग एक बार फिर पुराने और भरोसेमंद निवेश के तरीके की ओर रुख कर रहे हैं। यह पुराना और भरोसेमंद तरीका है पोस्ट ऑफिस में निवेश। भारत सरकार के डाक विभाग की छोटी बचत योजनाएं अपनी सुरक्षा, स्थिर रिटर्न और देश के दूरदराज इलाकों तक आसान पहुंच के कारण फिर से लोकप्रिय हो रही हैं। ये योजनाएं डाक विभाग द्वारा संचालित की जाती हैं, जो संचार मंत्रालय के अधीन है। इनमें सुरक्षा, टैक्स लाभ और अच्छे ब्याज दरों का शानदार मिश्रण है। आइए, जानते हैं पोस्ट ऑफिस की कुछ सबसे लोकप्रिय बचत और निवेश योजनाओं के बारे में।
- पोस्ट ऑफिस बचत खाता : आसान और सुरक्षित शुरुआत**

पोस्ट ऑफिस का बचत खाता बैंकों की तरह ही एक कम जोखिम वाला और ब्याज देने वाला विकल्प है। इसमें सालाना 4 फीसदी ब्याज मिलता है। खाता खोलने के लिए कम से कम 500 रुपये की जरूरत होती है, और अधिकतम जमा की कोई सीमा नहीं है। यह खाता कोई भी व्यक्ति, दो लोग मिलकर (जॉइंट) या 10 साल से ज्यादा उम्र के नाबालिग भी खोल सकते हैं। इस खाते की ब्याज से होने वाली आय पर 10,000 रुपये तक की छूट टैक्स में मिलती है (सेक्शन 80टीए के तहत)। अगर खाता तीन साल तक इस्तेमाल न हो तो यह निष्क्रिय हो जाता है, लेकिन इसे फिर से चालू किया जा सकता है। एक जरूरी बात—हर व्यक्ति केवल एक ही बचत खाता खोल सकता है।
- एक साल पूरा होने के बाद आप खाते में जमा राशि का 50 फीसदी तक लोन भी ले सकते हैं। अगर आपको समय से पहले खाता बंद करना हो, तो तीन साल बाद यह मुफ़्तक है, लेकिन ब्याज में कुछ कटौती होगी।

- बाजार में उतार-चढ़ाव के बीच लोग बचत योजनाओं की ओर कर रहे रुख
- सुरक्षित व स्थिर रिटर्न देने में पूरी तरह से सक्षम
- डाक विभाग की छोटी बचत योजनाएं सुरक्षा
- स्थिर रिटर्न व देश के दूरदराज इलाकों तक आसान पहुंच के कारण लोकप्रिय हुई
- योजनाएं डाक विभाग द्वारा संचालित हैं जो संचार मंत्रालय के अधीन
- इनमें सुरक्षा, टैक्स लाभ और अच्छे ब्याज दरों का मिश्रण

पोस्ट ऑफिस की कुछ योजनाएं दे रही हैं तगड़ा रिटर्न, वो भी गारंटी के साथ



- आरडी : हर महीने बचत बढ़ा फायदा**

5 साल की रिकरिंग डिपॉजिट (आरडी) योजना मध्यम वर्ग के परिवारों में खूब पसंद की जाती है। यह उन लोगों के लिए है जो हर महीने थोड़ा-थोड़ा बचाकर बड़ा फंड बनाना चाहते हैं। इसमें 6.7 फीसदी सालाना ब्याज मिलता है, जो हर तीन महीने में चक्रवृद्धि (कंपाउंड) होता है। आप हर महीने सिर्फ 100 रुपये से भी शुरुआत कर सकते हैं। अगर आप कोई किस्त चुक जाते हैं, तो मामूली जुर्माना देना पड़ता है। 12 महीने की जमा और
- टीडी : गारंटीड रिटर्न का भरोसा**

पोस्ट ऑफिस का टाइम डिपॉजिट (टीडी) उन लोगों के लिए है, जो निश्चित रिटर्न चाहते हैं। यह बैंकों के फिक्स्ड डिपॉजिट की तरह ही है। जनवरी-मार्च 2024 की तिमाही में इसके ब्याज दर 6.9 फीसदी से 7.5 फीसदी के बीच हैं, जो 1, 2, 3 या 5 साल की अवधि पर निर्भर करता है। 5 साल का टाइम डिपॉजिट सबसे ज्यादा 7.5 फीसदी ब्याज देता है और आप कोई किस्त चुक जाते हैं (सेक्शन 80C के तहत)। अगर आपको समय से पहले पैसे निकालने हों, तो छह महीने बाद यह संभव है, लेकिन ब्याज में कुछ कटौती होगी।
- एमआईएस : हर महीने निश्चित आय**

रिटायरमेंट के बाद नियमित आय या कम जोखिम वाला निवेश चाहने वालों के लिए मंथली इनकम स्कीम (एमआईएस) बेहतरतरीन है। इसमें 7.4 फीसदी सालाना ब्याज मिलता है, जो हर महीने आपके खाते में आता है। इसमें अकेले व्यक्ति 9 लाख रुपये तक और जॉइंट खाते में 15 लाख रुपये तक जमा कर सकते हैं। इसकी अवधि 5 साल की है। अगर आप समय से पहले पैसे निकालना चाहें, तो एक साल बाद 2 फीसदी

पोस्ट ऑफिस की कुछ योजनाएं दे रही हैं तगड़ा रिटर्न, वो भी गारंटी के साथ

- एसएसवाई: बेटियों का सुनहरा भविष्य**

बेटियों की पढ़ाई और शादी के लिए बचत को प्रोत्साहन देने वाली सुकन्या समृद्धि योजना से ज्यादा 8.2 फीसदी ब्याज देती है। 10 साल से कम उम्र की बेटों के लिए माता-पिता या अभिभावक यह खाता खोल सकते हैं। इसमें हर साल कम से कम 250 रुपये और ज्यादा से ज्यादा 1.5 लाख रुपये जमा किए जा सकते हैं। 15 साल तक जमा कर सकते हैं और खाता 21 साल बाद या बेटों की शादी (18 साल की उम्र के बाद) पर मैच्योर होता है। इस योजना में तीन तरह के टैक्स लाभ हैं—जमा राशि, ब्याज और मैच्योरिटी पर मिलने वाली राशि, तीनों पर टैक्स छूट मिलती है (सेक्शन 80सी के तहत)।
- पीपीएफ : लंबे समय के लिए बेहतर**

पब्लिक प्रोविडेंट फंड (पीपीएफ) लंबे समय के निवेशकों की पहली पसंद है। इसमें 7.1 फीसदी ब्याज मिलता है और यह पूरी तरह सरकार द्वारा समर्थित है। हर साल कम से कम 500 रुपये और ज्यादा से ज्यादा 1.5 लाख रुपये जमा कर सकते हैं। इसकी अवधि 15 साल की है, जिसे 5-5 साल के लिए बढ़ाया जा सकता है। इस दौरान लोन और आंशिक निकासी की सुविधा भी है। पीपीएफ की सबसे बड़ी खासियत यह है कि ब्याज और मैच्योरिटी पर मिलने वाली पूरी राशि टैक्स-फ्री है। यह रिटायरमेंट और टैक्स प्लानिंग के लिए शानदार विकल्प है।
- सुरक्षा की बढ़ रही है चाहत**

जहां म्यूचुअल फंड और शेयर बाजार जैसे निवेश युवा और जोखिम लेने वालों को आकर्षित करते हैं, वहीं पोस्ट ऑफिस की बचत योजनाएं बुजुर्गों, ग्रामीण क्षेत्रों और रुढ़िगत निवेशकों के लिए एक मजबूत सुरक्षा कवच हैं। जैसे-जैसे वित्तीय जागरूकता बढ़ रही है और डाक बैंकिंग की डिजिटल पहुंच सुधर रही है, ये योजनाएं अपनी पुरानी छवि को पीछे छोड़ रही हैं।

खबर संक्षेप



बहल खंड को जोन में मिला तीसरा स्थान

भिवानी। देश के अति पिछड़े खंडों को विकसित खंडों की श्रेणी में लाने के लिए नीति आयोग द्वारा आकांक्षी खंड कार्यक्रम के रूप में देश के 500 खंडों का चयन किया गया है। चयनित आकांक्षी खंडों में हरियाणा के सात खंड हैं, जिनमें भिवानी जिले से बहल और लोहारू खंड शामिल हैं। इन अति पिछड़े खंडों को विकसित खंडों में शामिल करने के लिए नीति आयोग स्थानीय प्रशासन के साथ मिलकर कई विषयों पर काम कर रहा है। इसके लिए विकास के विभिन्न सूचकांक तय किए गए हैं। नीति आयोग ने आकांक्षी खंड के रूप में चयनित खंडों को कई जोन में बांटा है। नीति आयोग द्वारा निर्धारित संकेतकों की उपायवत्त महावीर कौशिक द्वारा जिला स्तर व खंड विकास एवं पंचायत अधिकारी सुमित कुमार द्वारा हर माह समीक्षा बैठक की जाती है। नीति आयोग द्वारा निर्धारित माप दंडों पर स्थानीय प्रशासन द्वारा उठाए गए कदमों की नीति आयोग द्वारा लगातार मॉनिटरिंग की जाती है।

आदर्श महिला कॉलेज में जांच शिविर का आयोजन

भिवानी। आदर्श महिला कॉलेज में युथ रेडक्रास क्लब द्वारा 26 मई को मंगा हेल्थ चेकअप कैंप का आयोजन किया जाएगा, जिसमें भिवानी एवं आसपास क्षेत्रों के नागरिकों को निःशुल्क स्वास्थ्य जांच सेवाएं प्रदान की जाएंगी। कैंप में विशेषज्ञ डॉ. हिमांशु आंचल, डॉ. अंजना आंचल, डॉ. चराया, डॉ. साक्षी महता, डॉ. शेफाली खंजेजा, डॉ. शुभम महता, डॉ. पुष्कर धीर, डॉ. नितेश गोयल, डॉ. परिमा जैन अपनी सेवाएं देंगे। कार्यक्रम संयोजिका डॉ. अर्पणा बत्रा ने बताया कि कैंप सर्वसाधारण के लिए पूर्णतः निःशुल्क एवं खुला रहेगा। सभी नागरिकों से अनुरोध है कि वे इसका लाभ उठाएं और अपने स्वास्थ्य की जांच करवाएं।

शिशु भारती हाई स्कूल का परिणाम रहा शानदार



भिवानी। मेधावियों के साथ स्कूल के शिक्षक।

फोटो: हरिभूमि

भिवानी। कृष्ण कॉलोनी स्थित शिशु भारती हाई स्कूल की कक्षा दसवीं की बोर्ड परीक्षाओं का परिणाम रहा शानदार। संचालक कर्ण मिर्ग ने बताया कि इस वर्ष 22 विद्यार्थियों ने मेरिट सूची में नाम अंकित किया। वहीं नामित ने 95 प्रतिशत लेकर प्रथम स्थान प्राप्त किया, अंजलि ने 94.4 प्रतिशत लेकर दूसरा स्थान व मोक्ष ने 93.3

भारतीय सेना के सम्मान में निकाली तिरंगा यात्रा में लोगों ने लगाए गगन भेदी नारे

पाकिस्तान ने फिर से आतंकी हरकत की तो मुंहतोड़ जवाब दिया जाएगा : सांसद

आतंकवाद के खिलाफ भारत की लड़ाई जारी रहेगी: सांसद धर्मवीर

हरिभूमि न्यूज ►► भिवानी

जम्मू कश्मीर के पहलगाम में पाकिस्तानी आतंकवादी हमले का भारतीय सेना द्वारा सिंदूर ऑपरेशन से करारा जवाब दिए जाने पर भारतीय सेना के सम्मान में शनिवार को शहर में तिरंगा यात्रा निकाली गई। भिवानी महेंद्रगढ़ लोकसभा क्षेत्र से सांसद धर्मवीर सिंह, भिवानी से विधायक घनश्यामदास सर्राफ और बवानीखेड़ा से विधायक कपूर सिंह वाल्मीकि सहित हजारों की संख्या में कार्यकर्ता व शहरवासी शामिल हुए, जिसमें भारी संख्या में महिलाएं भी शामिल थी।

तिरंगा यात्रा भाजपा जिलाध्यक्ष वीरेंद्र कौशिक के नेतृत्व में निकाली गई। भारत माता का अपमान, नहीं सहेंगा हिंदुस्तान,



भिवानी। तिरंगा यात्रा में शामिल सांसद धर्मवीर सिंह, विधायक कपूर सिंह वाल्मीकि, विरेंद्र कौशिक व अन्य।

फोटो: हरिभूमि

वंदे मातरम, भारत माता की जय आदि जयकारों से छोटी काशी गुंजायमान हुई। तिरंगा यात्रा पंडित नेकीराम लाइब्रेरी से शुरू हुई जो घंटाघर चौक, बिचला बाजार होते हुए जैन चौक पर संपन्न हुई। तिरंगा यात्रा के जैन चौक में पहुंचने पर सांसद धर्मवीर सिंह ने अपना संदेश देते हुए कहा कि आतंकवाद के खिलाफ भारत की लड़ाई जारी रहेगी। पाकिस्तान ने फिर से ऐसी आतंकी हरकत की तो उसे मुंह तोड़ जवाब दिया जाएगा,

इसके लिए प्रधानमंत्री मोदी ने भारतीय सेना को खुली छूट दी हुई है, उन्हें अब इजाजत लेने की जरूरत नहीं है। उन्होंने कहा कि आज देश का हर आदमी भारतीय सेना के साथ में खड़ा है। देशभर में निकाली जा रही तिरंगा यात्राओं के माध्यम से भारतीय सेना के पराक्रम को सलाम किया जा रहा है। तपती दुपहरी में हजारों की संख्या में लोग तिरंगा यात्राओं में शामिल हुए, जो इस बात का प्रमाण है कि देशभक्ति की भावना हमारे अंदर कूट-कूटकर

ये रहे शामिल

तिरंगा यात्रा में बवानीखेड़ा नप चेयरमैन सुंदर अत्री, पूर्व भाजपा जिलाध्यक्ष नंदराम धनिया, शंकर धूपड, संदीप श्योरण, मीना परमार, ठाकुर विक्रम सिंह, सोनू सैनी, रमेश पचेरवाल, नवीता तवर, संदीप सरपंच, भवानी प्रताप सिंह, अमर सिंह हलुवासिया, सुभाष तवर, संदीप यादव, बार एसोसिएशन प्रधान संदीप तवर, विनोद चावला, हरिसिंह सांगवान, पूर्व चेयरमैन सुरेश सेन, विक्रम महता, हर्षवर्धन मान, शिवकुमार पाराशर, रेखा राघव, चंद्रा गुप्ता, सूर्य प्रताप व रेखा राघव आदि मौजूद रहे।

भी हुई है। उन्होंने आमजन से आह्वान किया कि हर भारतीय नागरिक को स्वदेशी चीज अपनानी चाहिए, भारत आज हर तरह से आत्मनिर्भर राष्ट्र बन चुका है। उन्होंने कहा कि देश की सीमाओं पर हमारे जवान बड़े ही हौसले और मजबूती के साथ खड़े हैं और राष्ट्र विरोधी ताकतों का मुंह तोड़ जवाब दे रहे हैं। भिवानी से विधायक घनश्यामदास सर्राफ ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी नेतृत्व में पूरा देश एक है और भारतीय सेना के साथ खड़ा है। हमने एकसाथ मिलकर देश को और अधिक ताकतवर बना को और भारतीय सेना ने दिखा दिया है कि आज हम किसी से किसी भी तरह कम नहीं हैं। भारत

की जवाबी कार्रवाई से पाकिस्तान को घुटने टेकने पड़े। बवानीखेड़ा से विधायक कपूर सिंह वाल्मीकि ने कहा कि भारतीय सेना के हमले को पाकिस्तान बिल्कुल भी सहन नहीं कर पाया। भारतीय सेना ने आतंकवादियों को मिट्टी में मिलने का काम किया। प्रधानमंत्री मोदी ने सेना को खुली छूट दी है कि आतंकवादियों को चुन-चुन कर मारा जाए।

भारत युवाओं का देश

भाजपा जिलाध्यक्ष वीरेंद्र कौशिक ने कहा कि भारत युवाओं का देश है, जिस देश में सबसे अधिक संख्या युवाओं की होती है, वह देश उतना ही अधिक ताकतवर होता है।



तिरंगा यात्रा में भाग लेते भाजपा लीगल सैल के सदस्य।

फोटो: हरिभूमि

तिरंगा यात्रा में भाजपा लीगल सैल ने लिया बढ़-चढ़कर हिस्सा

हरिभूमि न्यूज ►► भिवानी

■ जनमानस में राष्ट्रप्रेम की भावना को प्रबल करना हम सबका कर्तव्य: वर्मा

ऑपरेशन सिंदूर की सफलता व भारतीय सेना के सम्मान में शनिवार को भिवानी में तिरंगा यात्रा निकाली, जिसमें विभिन्न राजनीतिक, सामाजिक व पूर्व सैनिक संगठनों सहित आमजन ने बढ़-चढ़कर भाग लिया तथा देश की रक्षा एवं सुरक्षा में सेना के त्याग, बलिदान व शौर्य गाथा को जन-जन तक पहुंचाया। इसी कड़ी में पंडित नेकीराम लाइब्रेरी से जैन चौक तक निकाली गई तिरंगा यात्रा में भाजपा लीगल सैल के जिलाध्यक्ष एडवोकेट दिनेश वर्मा के नेतृत्व में सैल के सभी पदाधिकारियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया।

यात्रा में शामिल लोगों ने देशभक्ति से ओत-प्रोत होकर हाथों में तिरंगा लेकर सड़कों पर उतरे तथा देश के प्रति अपने प्रेम व सम्मान का प्रदर्शन किया। जिला बार एसोसिएशन से प्रधान संदीप तवर, सचिव विनोद भारद्वाज व

अधिवक्ता परिषद के प्रधान सुमित जांगड़ा के नेतृत्व में अनेक अधिवक्ता भी तिरंगा यात्रा का हिस्सा बने। सैल के जिला अध्यक्ष एडवोकेट दिनेश ने कहा कि यात्रा देश की एकता, अखंडता और संविधान के प्रति समर्पण का प्रतीक है। उन्होंने कहा कि कानून से जुड़े लोगों का यह कर्तव्य है कि वे संविधान की रक्षा के साथ-साथ जनमानस में राष्ट्र प्रेम की भावना को भी प्रबल करें। उन्होंने कहा कि इस आयोजन का उद्देश्य नागरिकों में देशभक्ति की भावना जागृत करना और युवाओं को राष्ट्र निर्माण में योगदान देने के लिए प्रेरित करना था। भाजपा लीगल सैल की सक्रिय भागीदारी ने यह संदेश दिया कि कानून के रक्षक भी राष्ट्र प्रेम में अग्रणी भूमिका निभा सकते हैं।

स्कूली बच्चों के साथ मनाया बेटी का जन्मदिन

हरिभूमि न्यूज ►► बवानीखेड़ा

बोहल गांव के विजय नेहरा ने कनाडा में रहने वाली अपनी बेटी रिया नेहरा का तीसवां जन्मदिन राजकीय उच्च विद्यालय बोहल के बच्चों के साथ मनाया रिया नेहरा चंडीगढ़ युनिवर्सिटी से गोल्ड मेडलिस्ट है इसके अतिरिक्त बेटी ने जूडो में नेशनल प्लेयर के रूप में 7 स्वर्ण पदक भी जीत रखे हैं।

अपनी प्रतिभा के दम पर आज रिया नेहरा कनाडा में एक प्रतिष्ठित कम्पनी में करोड़ों रुपयों का पैकेज ले रही है। इस अवसर पर रिया नेहरा



भिवानी। बेटी के जन्मदिन पर बच्चों का मुंह मीठा करवाते हुए।

फोटो: हरिभूमि

के पिता विजय नेहरा ने पूरे विद्यालय को लड्डू खिलाकर अपनी बेटी का जन्मदिन मनाया। पूरे कार्यक्रम को बेटी ने कनाडा से वीडियो काल के माध्यम से देखा व अपनी खुशी जाहिर की। रिया ने कहा कि इसप्रकार से मनाया गया जन्मदिन मेरे लिए अविस्मरणीय रहेगा। रिया

- बेटी ने जूडो में 7 स्वर्ण पदक भी जीत रखे हैं
- कनाडा में प्रतिष्ठित कम्पनी में करोड़ों रुपयों का पैकेज ले रही है

की दादी राजो देवी „माता सुनीता देवी ने इस उपलक्ष पर विद्यालय को एक वाटर कूलर देने की बात कही। विद्यालय मुखिया संदीप शर्मा ने इस आयोजन को बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ अभियान में एक मिल का पत्थर कहा और कहा कि ऐसे आयोजन समाज में चेतना का कार्य करेंगे। मुखाध्यापक ने इस अवसा पर साथ आये गणमान्य का स्वागत किया व स्मृति चिन्ह दिया। इस अवसर पर नीलम, मीना अंजू, मदन पाल,,राजेश, कुलदीप, संदीप नेहरा सुरेश संदीप इत्यादि विद्यालय स्टाफ उपस्थित रहा।

वंशिका तंवर 97 फीसदी अंक लेकर बनीं टॉपर

हरिभूमि न्यूज ►► भिवानी

सैनिक हाई स्कूल के बच्चों ने लहराया पंचम। कक्षा दसवीं की बोर्ड परीक्षाओं वंशिका तंवर ने 97 प्रतिशत अंक लेकर प्रथम स्थान प्राप्त किया। वहीं वंशिका सिंह व अमित ने 96.4 प्रतिशत लेकर द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

कंप्यूटर में 100 अंक लिए

इस मौके पर सभी स्टाफ सदस्यों ने बच्चों को माला पहना कर और मिठाई खिला कर अपनी खुशी व्यक्त की। प्राचार्या स्नेह लता ने बताया कि कुल 10 विद्यार्थियों ने 90



भिवानी। बेहतरीन रिजल्ट आने पर खुशी मनाते छात्र।

फोटो: हरिभूमि

प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त किए व 18 विद्यार्थियों ने कुल मेरिट प्राप्त की।

उन्होंने इसका श्रेय विद्यार्थियों की मेहनत, अध्यापकों की लगन व अभिभावकों के साथ को दिया।

संचालक कर्ण मिर्ग ने बताया कि संस्कृत में 5 विद्यार्थियों ने व कंप्यूटर में 4 विद्यार्थियों 100 अंक प्राप्त किए। उन्होंने सभी विद्यार्थियों अभिभावकों व अध्यापकगण को बधाई दी।



भिवानी। गंदा पानी दिखाते सोसाइटीवासी।



भिवानी। रक्तदाताओं को बैज लगाते सदानंद महाराज।

दूषित और बदबूदार पानी की सप्लाई से सोसाइटीवासी परेशान भिवानी। हांसी रोड स्थित मंगलम एक्स्लेव सोसायटीवासी दूषित एवं बदबूदार पानी की समस्या से जूझ रहे हैं। शनिवार सुबह सोसायटी में पानी की सप्लाई शुरू हुई तो पानी में से बदबू आ रही थी। दूषित पेयजल को लेकर सोसायटीवासियों ने रोष जताया तथा जिला प्रशासन से दूषित पेयजल की समस्या के समाधान की मांग की।

इस दौरान सोसायटीवासियों ने लिखित ज्ञापन जिला प्रशासन के नाम भेजा। सोसायटी निवासी लता बवेजा, आरती सोनी, सुधा शर्मा, डॉ. नरेंद्र तनेजा, मनोज शर्मा, निशांत शर्मा, राजकुमार, राजेश जैन, सुमित जैन, संचित गोयल, मनीष वर्मा ने कहा कि स्वच्छ पेयजल हमारा अधिकार है, ऐसे में प्रशासन आमजन के प्रति अपने उत्तरदायित्व को निभाएं तथा उनकी मूलभूत सुविधाएं पूरी करने की तरफ ध्यान दें। उन्होंने कहा कि पिछले कई दिनों से पानी की गुणवत्ता लगातार खराब हो रही है, लेकिन बार-बार शिकायत करने के बावजूद प्रशासन ने कोई ठोस कदम नहीं उठाया गया। उन्होंने कहा कि दूषित व बदबूदार पानी पीने से उनके बच्चों की तबीयत तक बिगड़ गई है।

राधिकदास महाराज की पुण्यतिथि पर शिविर में 105 ने किया रक्तदान

भिवानी। नर सेवा ही नारायण सेवा के सिद्धांत को आत्मसात करते हुए श्रीकृष्ण प्रणामी सेवा समिति ने राधिकदास महाराज की 13वीं पुण्यतिथि पर शनिवार को श्रीकृष्ण प्रणामी मंदिर में रक्तदान शिविर का आयोजन किया। पूर्व पार्षद अशोक यादव ने बताया कि शिविर में स्वामी सदानंद महाराज का सान्निध्य रहा। शिविर में श्रद्धालुओं और समाजसेवियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया और स्वामी राधिकादास महाराज को श्रद्धांजलि अर्पित की। शिविर में एम्स बाढ़सा की टीम ने कुल 105 यूनिट रक्त एकत्रित किया। स्वामी सदानंद महाराज, जगत महाराज व मुकंद शास्त्री महाराज ने कहा कि राधिकदास महाराज की पुण्यतिथि पर आयोजित रक्तदान शिविर में उनके जीवन और उनके समाजसेवा के कार्यों को स्मरण किया और लोगों से मानवता की सेवा में आगे आने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि राधिकादास महाराज का जीवन सदैव सेवा, त्याग और समर्पण का प्रतीक रहा है।



विद्यार्थियों का मुंह मीठा करवाते स्टाफ सदस्य।

आदर्श स्कूल के विद्यार्थियों ने फिर लहराया परचम

गांव बौद्ध कलां स्थित आदर्श वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों ने हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड द्वारा घोषित कक्षा 10वीं के वार्षिक परीक्षा परिणाम सत्र 2024-25 में विद्यालय ने पूरे हरियाणा प्रदेश में तीसरा स्थान प्राप्त किया है। परीक्षा में रमा ने 495 अंक प्राप्त करके हरियाणा में तीसरा स्थान प्राप्त किया। वहीं अदिति ने 493 अंक प्राप्त कर में पांचवां स्थान, अजीत 486, जाह्नवी चहल 485, हिमांशी 478, पारुल ने 478, ईशा 476, संचिता 475 अंक प्राप्त कर नाम रोशन किया। इस अवसर पर प्राचार्य कृष्ण दत्त यादव, कंवर सिंह यादव, ओमप्रकाश सिंह यादव ने सभी विद्यार्थियों को उनके शानदार परीक्षा परिणाम के लिए बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

हरियाणा जागृति मोर्चा एवं अधिवक्ताओं ने जनसम्पर्क अभियान चलाया संविधान रचयिता डॉ. अम्बेडकर की फोटो की बेअदबी का मामला पहुंचा जनता के बीच

हरिभूमि न्यूज ►► भिवानी

बवानीखेड़ा तहसील में अज्ञात लोगों द्वारा अधिवक्ता के चेम्बर व शैड तोड़कर चोरी करने व वहां पर लगी संविधान रचयिता की फोटो की बेअदबी का मामला तूल पकड़ता जा रहा है। शनिवार को इसी क्रम में हरियाणा जागृति मोर्चा के सदस्यों ने संविधान रचयिता डॉ. बी आर अम्बेडकर की फोटो की बेअदबी मामले में लोगों का समर्थन के लिए जन सम्पर्क अभियान चलाया। इस दौरान उन्होंने लोगों को बताया कि एक साजिश के तहत चेम्बर तोड़कर बाबा साहेब



भिवानी। मामले की जानकारी देते मोर्चा के पदाधिकारी।

फोटो: हरिभूमि

अम्बेडकर की फोटो को तोड़ा व मिट्टी में दबाया। यह संविधान रचयिता का घोर अपमान है।

अधिवक्ता किसी जति या धर्म विशेष का नहीं होता वो गरिब ,मजदूर तथा पिंडित लोगो के विधि

अनुरूप लड़ कर न्याय दिलाने का काम करता है , ऐसा कृत्य उनके साथ तहसील परिसर में घटित होता एक सामान्य व्यक्ति कैसे घर में सुरक्षित होगा । वे इसको कतई सहन नहीं करेंगे।

उन्होंने लोगों को बताया कि अगर दो दिन के भीतर प्रशासन ने कोई कार्रवाई नहीं की तो वे बवानीखेड़ा तहसील परिसर में सार्वजनिक धरने पर बैठने पर मजबूर होंगे। वहीं बाबा साहेब अम्बेडर की फोटो का अपमान सहन नहीं किया जा सकता। अज्ञात लोगों ने ऐसे महापुरुष का अपमान किया है। जिसने देश का संविधान रचा हो।

उल्लेखनीय है कि विगत में अज्ञात लोगों ने तहसील परिसर स्थित अधिवक्ता राजेश सिंधु व मीना चोपड़ा का चैम्बर तोड़कर हजारों रुपए का सामान ले गए। वहीं चेम्बर के साथ लगते सैड भी तोड़े ,साथ ही आरोपियों ने चैम्बर में लगी संविधान निर्माता बीआर अंबेडर की फोटो व संविधान की प्रस्तावना को भी खंडित कर दिया। यहां तक कि आरोपियों ने फोटो व प्रस्तावना . को तोड़कर बाहर गया दिया।

इस मौके पर अधिवक्ता मीना चोपड़ा, राजेश सिंधु, अमित दहिया, सुमन दहिया व रामकिशन काजल आदि साथ थे।



भिवानी। स्कूल में उपस्थित छात्रएं

फोटो: हरिभूमि

पूजा को 83 प्रतिशत शीतल को 83 प्रतिशत सुनीता को 83 प्रतिशत खुशी को 79 प्रतिशत सपना को 73 प्रतिशत व पारुल को 71 प्रतिशत अंक हासिल हुए थे। आज शनिवार को जारी हुआ दसवीं का रिजल्ट भी इन खिलाड़ियों के नाम बोलता है। इनमें से वर्षा को 93 प्रतिशत संध्या को 89 प्रतिशत प्राची को 88 प्रतिशत हिमांशी को 84 प्रतिशत

प्रतिशत रिया ने 81 प्रतिशत खुशबू ने 80 प्रतिशत काफी ने 76 प्रतिशत सपना ने 71 प्रतिशत सोनम ने 71 प्रतिशत सोफी ने 68 प्रतिशत व भावना ने 60 प्रतिशत अंक लेकर अपने गांव में स्कूल का नाम रोशन किया है वहीं को सोनीका कोच ने बताया कि आज जारी हुए की बेटियां फुटबॉल के क्षेत्र में अपना नाम कमा रही है वहीं दूसरी ओर शिक्षा के क्षेत्र में भी अच्छे अंक लेकर झंडा बुलंद कर रही है।

खबर संक्षेप



आरती ।

मधु ।

दसवीं के परिणाम में छात्र ग्रीन मिडोज के विद्यार्थी चरखी दादरी। गांव चरखी स्थित ग्रीन मिडोज वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के बच्चों ने आज हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड भिवानी द्वारा घोषित किए गए कक्षा 10वीं के परीक्षा परिणामों में शानदार प्रदर्शन किया है। स्कूल का परीक्षा परिणाम शत प्रतिशत रहा है। प्राचार्य सुरेश सांगवान ने बताया कि 43 विद्यार्थियों ने परीक्षा दी थी। इनमें से 36 ने मेरिट सूची में नाम दर्ज करवाया है। 90 फीसदी से अधिक अंक 13 बच्चों ने पाए हैं। इसी कड़ी में विषयानुसार कम्यूटर में आरती, मधु, निष्ठा, गणित में दीपिका ने 100 अंक प्राप्त किए।

पक्षियों के लिए बनाए 100 घोंसलें व 50 टीन भिवानी।

पुराना हाऊसिंग बोर्ड कॉलोनी में भिवानी पर्यावरण शुद्धिकरण समिति की मीटिंग का आयोजन किया। मीटिंग को संबोधित करते हुए समिति के संयोजक केके वर्मा ने बताया कि पर्यावरण संरक्षण की दिशा में कार्य करते हुए भिवानी पर्यावरण शुद्धिकरण समिति द्वारा अहम कदम उठाए जा रहे हैं, जिसके तहत कबाड़ से जुगाड़ के अंतर्गत पक्षियों के लिए 100 घोंसले व दाना-पानी के लिए 50 टीन बनाए गए हैं, जिन्हें पार्कों में लगाया जा रहा है। इसके अलावा गायों के लिए 20 गो-ग्रास टीन तैयार किए हैं, जिनमें से 12 टीन पुराने हाऊसिंग बोर्ड में पायलट रिहसल के लिए लगाकर आजमाया तथा कॉलोनीवासियों ने कचरे को अलग छांट कर गाय के खाने लायक को टीन में डाला और बाकी को कम्पटी के टिप्पर में डाला, जिससे गायों को भी भोजन मिला और टीपर में कचरे के लिए स्थान भी बना। संयोजक केके वर्मा ने बताया कि वर्ष 2025 के सीजन के लिए कबाड़ से जुगाड़ के अंतर्गत 300 टी-गार्ड और बनाने का लक्ष्य लिया है। प्राचार्य रविंद्र वैद ने समिति कार्यालय, कार्यशाला व नर्सरी का भागपा जिलाध्यक्ष वीरेंद्र कौशिक को अवलोकन करवाया। प्रधान विरेंद्र कौशिक ने समिति के कार्यों की भूरी-भूरी प्रशंसा की भिवानी को शुद्ध पर्यावरण युक्त व प्रदूषण मुक्त बनाने के प्रयासों को अद्वितीय बताया।

नगर व्यापार मंडल के लिए फ्री मेडिकल कैम्प आज

भिवानी। भिवानी के दिनोद गेट स्थित अंचल नर्सिंग होम में 18 मई को नि:शुल्क मेडिकल कैम्प का आयोजन किया जाएगा। यह आयोजन नगर व्यापार मंडल के द्वारा किया जाएगा। कैम्प में मेडनाल हॉस्पिटल के हृदय रोग विशेषज्ञ डॉ विजय व छाती रोग विशेषज्ञ डॉ दीपाशु मरीजों की नि:शुल्क जांच करेंगे। यह जानकारी नगर व्यापार मंडल के अध्यक्ष मानु प्रताप ने दी। उन्होंने बताया की व्यापार मंडल के व्यापारी अपने स्वास्थ्य की और ध्यान नहीं दे पाते इसलिए यह कैम्प आयोजित किया गया है। वहीं भिवानी अंचल हॉस्पिटल के निदेशक डॉ विनोद अंचल ने बताया कि इस कैम्प में नि:शुल्क ईसीजी, कैल्शियम की जांच, फेकडी की जांच व शुगर की जांच की जाएगी। कैम्प का समय सुबह 10 बजे से दोपहर दो बजे तक रहेगा।

हरिभूमि

आवश्यक सूचना

जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-

हरिभूमि, शॉप नं. 47, इन्फ्यूमेंट ट्रस्ट मार्केट, भिवानी
फोन नं. : 8295157800, 8814999151, 9253681005

मृत्यु अंत नहीं है

मृत्यु कभी भी अंत नहीं हो सकती
मृत्यु एक पथ है, जीवन एक यात्रा है
आत्मा पथ प्रदर्शक है।

हरिभूमि

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

इस शोकाकुल समय में हम आपके सहभागी हैं।

तेरहवीं/श्रद्धान्जलि/शोक संदेश

आप अर्पित कीजिये अपने श्रद्धा-सुमन हरिभूमि के माध्यम से

साईज	संस्करण	विशेष छूट राशि
5 × 8 सें.मी 10X 8 सें.मी	स्थानीय संस्करण के अन्दर के पृष्ठ पर	छ. 2000/- रु. 2500/-

+5% GST Extra
नोट : विशेष छूट राशि केवल उपरोक्त साईज पर मान्य। अन्य किसी साईज के लिए कोई रेट लागू।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें

भिवानी : हरिभूमि, शॉप नं. 47, इन्फ्यूमेंट ट्रस्ट मार्केट, भिवानी
फोन : 8814999170, दादरी : 9253681008

विधायक व नप चेयरपर्सन प्रतिनिधि के हस्तक्षेप पर टैकरों में भरवाया पानी

पानी पर तकरार, पब्लिक हेल्थ ने रोके टैकर, पार्शद हुए आपे से बाहर

पब्लिक हेल्थ ने पार्शदों को टैकर भरने से रोका

हरिभूमि न्यूज़ ►►भिवानी

लगता है पब्लिक हेल्थ के अधिकारी शहर में पानी की समस्या का समाधान ही नहीं होने देना चाहते। पार्शद व नप ने अपने स्तर पर आठ टैकरों के जरिए अपने-अपने क्षेत्रों में पानी की सप्लाई कर रहे हैं,शनिवार को पब्लिक हेल्थ ने नप के टैकरों में पानी भरने से इंकार कर दिया। जिससे शहर के सभी पार्शदों ने चेयरपर्सन प्रतिनिधि भवानी प्रताप सिंह की अगुवाई में एक्शन से मिले व अपना विरोध जताया। विधायक घनश्याम सर्राफ ने विभाग के ईआईसी को मामले से अवगत करवाया।

एक घंटे हंगामा

करीब एक घंटे तक पब्लिक हेल्थ के दफ्तर में हंगामा होता रहा। बाद में विधायक सर्राफ और चेयरपर्सन प्रतिनिधि भवानी प्रताप सिंह ने ईआईसी व अधीक्षक अभियंता से मामले की जानकारी देने के बाद टैकरों में पानी भरने पर सहमति हुई। उसके बाद नप ने अपने टैकरों में



भिवानी । पानी न भरने देने का विरोध जताते पार्शद व नप चेयरपर्सन प्रतिनिधि ।

जेई नहीं उठाते फोन

पब्लिक हेल्थ उन इलाकों में पानी के टैकर भिजवाती है। जिन इलाकों के लोग पीने के पानी की समस्या की शिकायत करते हैं। कुछ दिनों तक तो पब्लिक हेल्थ ने पानी की सप्लाई दी।लेकिन पानी के टैकर नहीं भेजते। अगर एसडीओ से बात की जाती है तो वे जेई का मोबाइल नम्बर दे देते हैं। जब जेई से बात की जाती है तो जेई फोन ही नहीं उठाते। फोन नहीं उठाते पर किस तरह से प्रभावित इलाके में पानी का टैकर भेजा जा सकेगा। पब्लिक हेल्थ के उपक्षित रवैये के बाद ही नप ने यह कदम उठाया।

जनता के फोन आने पर भेजते है पानी के टैकर

चेयरपर्सन प्रतिनिधि भवानी प्रताप सिंह ने बताया कि उनके पास पानी की कमी को लेकर जनता के फोन आते हैं। एक एक पार्शद पर दिन में करीब 70 से 80 तक पानी भेजने के लिए फोन आ जाते हैं। नि:शुल्क पानी का टैकर भेजते हैं,लेकिन पब्लिक हेल्थ ने आज उनके टैकर भरने से इंकार कर दिया। जिसका हमने विरोध किया। विभाग के अधिकांश टैकर खाली खड़े हैं व फोन नहीं उठाते। जनता पानी को तरस रही है। विभाग की अनदेखी के कारण नप व पार्शदों को यह काम करना पड़ रहा है।

पानी भरकर लोगों की मांग के अनुरूप उनके घरों तक पहुंचना शुरू किया। वाइस चेयरमैन प्रतिनिधि संदीप तंवर,पार्शद संदीप

यादव, सुभाष तंवर, सत्येंद्र मोर, अजय कुमार, पवन सेनी, मनोज खन्ना, सूर्य, अनिल, शिवकुमार, सुक्रमपाल इत्यादि मौजूद रहे।



भिवानी । सहमति बनने के बाद पानी भरवाने पहुंचे टैकर ।

फोटो : हरिभूमि

टैकर भरने से रोका तो कार्यालय पहुंचे

शनिवार दोपहर बाद नगरपरिषद के टैकर पानी लेने के लिए पब्लिक हेल्थ विभाग के कार्यालय पहुंचे तो वहां पर तैनात कर्मचारियों ने पानी भरने से इंकार कर दिया। नप कर्मचारियों ने इसकी सूचना नगरपरिषद चेयरपर्सन प्रतिनिधि भवानी प्रताप सिंह से की। उसके बाद नप चेयरपर्सन प्रतिनिधि व शहर के करीब दो दर्जन से ज्यादा पार्शद पब्लिक हेल्थ के कार्यालय में पहुंच गए। वहां पर उन्होंने इस बारे में कार्यकारी अभियंता से बातचीत की।लेकिन उन्होंने ईआईसी की ओर से इंकार करने की बात कह कर पानी भरने से रोका है। इस दौरान विधायक घनश्याम सर्राफ ने इस मामले में ईआईसी से बात की और मामले की जानकारी दी। करीब एक घंटे तक कार्यालय में हंगामा होता रहा। बाद में ईआईसी ने नप के टैकरों में पानी भरने पर सहमति जता दी।

नप ने जुगाड़ से तैयार किए आठ टैकर

नगरपरिषद के पास पुराने टैक्टर खड़े थे और पुराने ही टैकर थे। कुछ पार्शदों ने सहयोग किया तो नगरपरिषद ने आठ टैकर तैयार कर लिए। उसके बाद भी जिस भी इलाके से किसी व्यक्ति ने पानी की कमी की सूचना दी। नप उसी समय उसी इलाके में नि:शुल्क पानी का टैकर भेज रही है। दूसरी तरफ पब्लिक नप पार्शदों के पास भी पानी की शिकायत करती है तो पार्शद नगरपरिषद के टैकरों को ही उन इलाकों में भेजा जाता है। यहां यह बताते चले कि नगरपरिषद ने जुगाड़ की यह व्यवस्था पब्लिक हेल्थ विभाग के अधिकारी पानी की समस्या का समाधान न करने पर की है।

गर्व से सीना चौड़ा पर बेटे को खोने का गम, समसुपर में हर आंख हुई नम

- बेटे पर गर्व है, घर में तो कुछ नहीं बचा, इकलौता था मनोज : मां
- शहीद मनोज फौगाट को हजारों लोगों ने दी अंतिम विदाई
- छत्तों से पुष्पवर्षा, महिलाओं ने किए शहीद बेटे के अंतिम दीदार

हरिभूमि न्यूज़ ►►चरखी दादरी

पंजाब के कपूरथला में गोली लगने से शहीद हुए लांसनायक मनोज फौगाट का पार्थिव शव शनिवार को गांव समसपुर पहुंचा। जहां सैन्य सम्मान के साथ अंतिम संस्कार किया गया। हजारों महिलाओं ने छत्तों से बेटे के पार्थिव शरीर पर पुष्पवर्षा कर अंतिम विदाई दी। जब पांच साल के प्रिंस ने अपने शहीद पापा को सेल्यूट कर मुखाग्नि दी तो हर आंख नम हो गई।ज्ञात रहे कि 15 मई को गांव समसपुर निवासी लांसनायक मनोज फौगाट पंजाब के कपूरथला में गोली लगने से शहीद हो गए थे। शनिवार को जब शहीद का पार्थिव शरीर जब गांव पहुंचा तो अंतिम दर्शनों के लिए हजारों लोगों की भीड़ उमड़ पड़ी।

पांव रखने की जगह नहीं

घर के समीप पांव रखने तक की जगह नहीं बची। युवाओं ने शहीद के सम्मान में तिरंगा यात्रा निकाली। सेना के जवानों ने मनोज के पार्थिव शरीर को अंतिम दर्शन के लिए



चरखी दादरी । विलाप करती शहीद मनोज की मां संतोष व शहीद के बेटे प्रिंस का दुलार करते सांसद धर्मवीर सिंह ।



चरखी दादरी । अंतिम संस्कार में उमड़ी हुई भीड़ ।



चरखी दादरी । अंतिम संस्कार में उमड़ी हुई भीड़ ।

आंगन में रखा तो विलाप से आसमान गूंज उठा। गांव की हर महिला बेटे को देखने के लिए आगे बढ़ी और सिर पर हाथ रखा। इसके बाद गांव की गलियों में शव यात्रा पर पुष्पवर्षा हुई। गांव के बुजुर्गों से लेकर बच्चों ने छत्तों व दीवारों पर खड़े होकर सलाम किया। प्रदेश सरकार की तरफ से मंत्री श्रुति चौधरी, सांसद धर्मवीर सिंह व विधायक सुनील सांगवान ने शहीद को श्रद्धांजलि दी। मनोज फौगाट 2011 में ग्रेनेडियर यूनिट में भर्ती हुआ था। उसकी ड्यूटी पंजाब के कपूरथला में थी। मनोज के बड़े भाई कर्मपाल

दरवाजे पर टिकी रही पत्नी रेखा की नजर

मनोज की छुट्टी आने की खबर मिलने पर उनकी पत्नी रेखा बड़े चाव से स्वादिष्ट व्यंजन बनाकर पति का इंतजार करती थी, मगर आज उसी रेखा का चेहरा उदास और विरान हो चुका था। शहीद मनोज की पत्नी रेखा की नजर दरवाजे पर टिकी थी। इस नजर में दु:ख व गम था,जो हमेशा सताता एवं पीड़ा देता रहेगा।

पांच साल का बेटा बोला पापा को सेल्यूट

शहीद मनोज कुमार के दो बच्चे हैं, जिसमें आठ साल की बेटी दीक्षा व पांच साल का बेटा प्रिंस है। पांच साल के मासूम प्रिंस ने जब पापा मनोज का पार्थिव शरीर देखा तो बोला पापा आपको सेल्यूट है। इसके बाद परिवार के बुजुर्ग के कंधे पर बैठकर श्मशान घाट पहुंचे और मुखाग्नि दी।

दीक्षा और पांच साल का प्रिंस है। शहीद मनोज की मां संतोष ने कहा कि बेटे की शहादत का गर्व तो है, लेकिन घर उमड़ गया।

तिगड़ाना की घटना, वीडियो वायरल, डाक अधीक्षक पहुंचे

जोहड़ किनारे डाक फेंक डाकिया फरार

- सुबह मंडाणा रोड स्थित डाबर जोहड़ किनारे पड़े मिले डीएल, प्रमाण पत्र, सरकारी डाक और चिट्ठियां व अन्य दस्तावेज, मचा हड़कंप।

हरिभूमि न्यूज़ ►► भिवानी

गांव तिगड़ाना में शनिवार सुबह उस समय हड़कंप मच गया, जब मंडाणा रोड स्थित डाबर जोहड़ के किनारे ग्रामीणों ने वहां पर पड़ी सैकड़ों सरकारी डाक और जरूरी दस्तावेज बिखरे हुए देखे। दस्तावेजों में ड्राईविंग लाइसेंस, प्रमाण पत्र, बैंक पत्र, पेंशन से जुड़ी चिट्ठा सहित अन्य महत्वपूर्ण सरकारी कागजात शामिल थे, जिन्हें देखकर सभी दंग रहे गए।

ग्रामीणों ने तुरंत इस घटना का वीडियो बनाकर सोशल मीडिया पर वायरल कर दिया। वीडियो में ये स्पष्ट देखा जा सकता है कि गांव के जोहड़ किनारे बड़ी मात्रा में कागजात बिखरे



भिवानी । गांव तिगड़ाना के जोहड़ किनारे पड़ी डाक को देखते ग्रामीण ।

फोटो : हरिभूमि

पड़े हैं, जिन्हे डाक कर्मचारी ने अपनी ड्यूटी के प्रति लापरवाही बरतते हुए जोहड़ के पास फेंका हैं। ग्रामीणों ने आरोप लगाया कि ये काम डाकघर में नियुक्त एक कर्मचारी ने किया है, जो घटना के बाद से फरार है। ग्रामीणों ने बताया कि वे सुबह घूमने के लिए आए तो उन्होंने देखा कि डाबर जोहड़ के पास बड़ी मात्रा में डाक बिखरी पड़ी है।

उन्होंने तुरंत इस मामले को प्रशासन के संज्ञान में लाने के उद्देश्य से वीडियो बनाकर वायरल कर दी। उन्होंने कहा कि ये घटना डाक विभाग की घोर लापरवाही को दर्शाती है, क्योंकि कई ग्रामीण महीनों से अपनी डाक का इंतजार कर रहे थे, जिसमें उनके काफी अहम दस्तावेज थे। ग्रामीणों ने वीडियो के माध्यम से संबंधित विभाग से मांग

खुद जाकर मौका देखा, जांच कार्रवाई शुरू: डाक अधीक्षक
तिगड़ाना में जोहड़ पर डाक मिलने का मामला उनके संज्ञान में आया और वे खुद इंस्पेक्टर दीपक कुमार के साथ मौके पर पहुंचे और मौका निरीक्षण किया। उन्हें भी झाड़ियों में दो-चार डाक मिली हैं। उनके मौके पर पहुंचने से पहले गामीण डाक को हथपट्ट करके मुख्य डाकघर भिवानी ले लो आए थे। ये करीबन 100 डाक हैं, जो दिसंबर 2023 से मार्च 2024 तक की हैं। वे वर्ष 2023-24 के ड्यूटी चार्ट में किस पोस्टमैन की ड्यूटी थी, चैक करवाएंगे और ड्यूटी में लापरवाही बरतने वाले दोषी कर्मचारी के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने सभी कर्मचारियों से पूर्ण निष्ठा एवं लगन से अपने कार्य को पूरा करने का आह्वान किया।
-संजय कुमार, अधीक्षक, मुख्य डाकघर भिवानी।

की कि अपनी ड्यूटी के प्रति इतनी बड़ी लापरवाही बरतने वाले डाक कर्मचार के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाए।



भिवानी । छात्र को सम्मानित करते हुए ।

फोटो : हरिभूमि

आनंद स्कूल फॉर एक्सीलेंस में सम्मान समारोह मनाया

- 10वीं व 12वीं के परीक्षा परिणाम में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों किए सम्मानित ।

हरिभूमि न्यूज़ ►►भिवानी

आनंद स्कूल फॉर एक्सीलेंस, मिलकपुर में सीबीएसई बोर्ड परीक्षा 2024-25 में 10वीं और 12वीं कक्षा के विद्यार्थियों के उत्कृष्ट परीक्षा परिणामों की खुशी सम्मान समारोह आयोजित किया। समारोह न केवल विद्यार्थियों की मेहनत का उत्सव था, बल्कि उनके उज्ज्वल भविष्य के प्रति विद्यालय की प्रतिबद्धता का भी प्रतीक बना। समारोह के मुख्य अतिथि ब्लॉक एजुकेशन ऑफिसर आनंद शर्मा रहे। उनके साथ मंच पर विद्यालय प्रबंधन समिति के प्रमुख सदस्य मास्टर राजेंद्र यादव, प्रोफेसर राजकुमार यादव तथा विद्यालय के निदेशक साहिल यादव भी उपस्थित रहे। सभी आगंतुकों का स्वागत उप प्रधानाचार्यां गोता यादव द्वारा किया गया। विद्यालय के प्राचार्य नीतीश मिश्र ने उपस्थित अभिभावकों को संबोधित करते हुए

अंकों तक सीमित न रहें

स्कूल चेयरमैन आनंद यादव ने कहा कि शिक्षा केवल परीक्षा में अंक लाने तक सीमित नहीं होनी चाहिए, बल्कि बच्चों को एक अच्छा इंसान बनाना भी विद्यालय की जिम्मेदारी है। उन्होंने अभिभावकों से शिक्षक और विद्यालय प्रबंधन के साथ समन्वय स्थापित कर बच्चों के भविष्य निर्माण में सक्रिय भूमिका निभाने का आह्वान किया। उन्होंने आगे कहा की खेल कोच वकील पूरा ने विद्यालय के छात्र-छात्राओं को खेलों में राष्ट्रीय स्तर तक पहुंचा कर स्कूल व क्षेत्र का नाम रोशन किया है। निदेशक साहिल यादव ने सभी आगंतुकों, अभिभावकों, शिक्षकों एवं स्टाफ का धन्यवाद किया।

बताया कि किस प्रकार विद्यालय ने शैक्षणिक क्षेत्र के साथ-साथ खेलकूद, सांस्कृतिक गतिविधियों एवं सामाजिक सरोकारों में भी उल्लेखनीय प्रगति की है। उन्होंने छात्रों की मेहनत और शिक्षकों के मार्गदर्शन को इस सफलता का मूल आधार बताया। विशिष्ट अतिथि प्रोफेसर राजकुमार यादव ने कहा, “शिक्षा और अनुशासन का समन्वय विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है।

कवर स्टोरी

डॉ. मीनिका शर्मा

कुछ समय पहले वर्ल्ड हेल्थ ऑर्गेनाइजेशन ने डिजिटल डिवाइसेस की लत को दुनिया भर में एक चिंताजनक समस्या बताया है। हर उम्र के लोग इसकी गिरफ्त में आ रहे हैं। इससे न केवल उनकी शारीरिक-मानसिक सेहत पर बुरा असर पड़ रहा है, लोग अनिद्रा के भी शिकार हो रहे हैं। ऐसे में जरूरी है कि हम इस लत की गंभीरता को समझें और इससे बचने के लिए हर संभव प्रयास करें।

हाल में फ्रंटियर्स इन साइकाएट्री जर्नल में प्रकाशित अध्ययन के अनुसार बिस्तर पर जाने के बाद एक घंटे तक स्क्रीन देखते हुए बिताने से अनिद्रा के लक्षण 59 प्रतिशत तक बढ़ जाने की संभावना होती है। स्मार्ट गैजेट्स की स्क्रीन से निकलने वाली ब्लू लाइट के साथ समय बिताने से नींद का कंटेंट देखा जाए, सोने से पहले स्क्रीन से निकलने वाली नीली रोशनी में बिताया जाने वाला समय ही मायने रखता है। माध्यम कोई भी हो, स्क्रीन टाइम अब लोगों की नींद को डिस्टर्ब करने वाली बड़ी वजह बन रहा है।

नींद पर पड़ रहा बुरा असर

रात के समय लोगों का स्क्रीन टाइम बढ़ने की कई वजहें हैं। इनमें से एक वजह यह है कि दिन भर घर-दफ्तर की भाग-दौड़ के बाद रात को आराम का समय मिलने पर अधिकतर लोग स्क्रीन में ही झंकाते रहते हैं। मेल, मैसेज या दूसरी जानकारियां देखने के साथ ही रात को सोने से पहले बहुत सा समय सोशल मीडिया स्क्रॉलिंग, रील्स और अलग-अलग तरह का कंटेंट देखने में भी लोग यूज करते हैं। स्मार्टफोन, लैपटॉप और टैबलेट जैसे डिजिटल डिवाइस अब बेडरूम में भी यूज किए जाते हैं। जिसके चलते कमोबेश हर उम्र के लोगों के सोने के समय का कुछ हिस्सा स्मार्ट डिवाइसेस के नाम हो गया है। हालिया अध्ययन कहता है कि स्क्रीन टाइम जितना ज्यादा होता है, नींद उतनी ही ज्यादा प्रभावित होती है।

दूरी बनाना है जरूरी

उक्त शोध के अध्ययनकर्ताओं और स्वास्थ्य विशेषज्ञों ने सोने से कम से कम एक घंटे पहले मोबाइल या अन्य किसी डिजिटल उपकरण का इस्तेमाल न करने की सलाह दी है। असल में अच्छी नींद के लिए मन-मस्तिष्क का शांत रहना आवश्यक है। सोने से पहले देखा गया कंटेंट कई बार मानसिक उद्वेलन का भी कारण बनता है। इतना ही नहीं स्क्रीन स्क्रॉलिंग के कारण हुई आंखों और दिमाग की थकान भी

गजल

अबुल कलाम

...जो होना था

लाख चास मगर दुश्मा वही जो होना था

अपनी तकदीर में लिखा फकत रोना था

किसी को हासिल थे तख्त व ताज यहां

कहीं फुटपाथ पर अखबार ही बिछौना था

सुनकर ही कलेजा गुंठ को आ गया

गंजर आतंक का कुछ इस कदर धिनौना था

तब कहीं जाकर दुश्मा कबूल होती

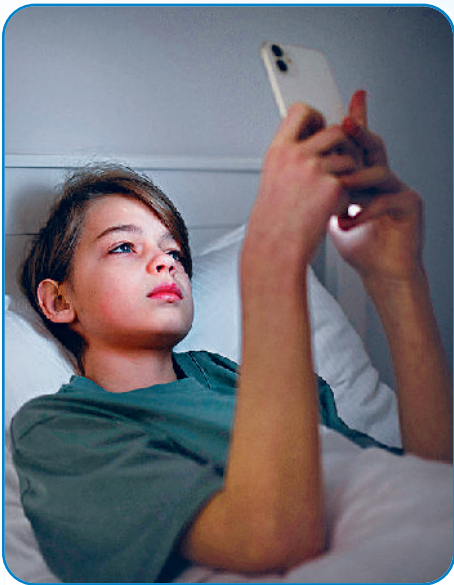
अपना दामन हमें आसुओं से भिगोना था

बरसात में टपकती हुई छत के नीचे

नहीं मरफूज घर में कोई कोना था

उन्हें सुविधा मिली और वे ही नामवर हुए

जिनको इस जहां में नफरत की फसल बोना था



डिजिटल डिवाइसेस की लत उड़ रही नींद-बिगड़ रही सेहत

ठीक से नींद आने में बाधा बनती है। समझना जरूरी है कि नींद चुराने वाली यह जीवनशैली सोने-जागने का पूरा पैटर्न ही बिगाड़ रही है। यही वजह है कि नॉर्वे के वैज्ञानिकों द्वारा 45,202 वयस्कों पर किए गए सर्वे के नतीजों को गंभीरता से लेना जरूरी है। बिस्तर पर जाने के बाद मोबाइल के यूज से अनिद्रा के जोखिम यानी इनसोमनिया से बचने के लिए स्क्रीन से दूरी बनाने के नियम बनाना और गंभीरता से उनका पालन करना बेहद जरूरी है।

हेल्थ भी होती है प्रभावित

स्मार्ट स्क्रीन की ब्लू लाइट से नींद की गुणवत्ता तो खराब होती ही है, दिनचर्या भी बिगड़ जाती है। ठीक से आराम न मिल पाने के कारण डेली रूटीन ही नहीं, दिलो-दिमाग भी अस्त-व्यस्त



रहते हैं। मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य के हर पहलू पर इसका नकारात्मक असर पड़ता है। हर दिन सोने के समय में होने वाली यह अनचाही कठौती बहुत सी स्वास्थ्य समस्याओं का कारण बन जाती है। ये कंडीशंस हार्ट प्रॉब्लम्स, डायबिटीज, मोटापा, डिप्रेशन और उच्च रक्तचाप जैसी कई परेशानियों को बढ़ाती हैं। थका हुआ शरीर और उलझा सा मन जीवन से जुड़ी दूसरी जिम्मेदारियों के निर्वहन में भी बाधा बनता है। गैजेट्स की लत लग जाने के बाद स्क्रीन से दूरी मन में हताशा, असमंजस और बेचैनी भर देती है। वहीं नींद की कमी से बनी इस मनःस्थिति से या तो बार-बार कुछ खाते रहने की आदत लग जाती है या भूख कम हो जाती है।

किशोरों और युवाओं में तो नींद की कमी हमीन असंतुलन की बड़ी वजह बनती है, जिससे कम उम्र में ही ओबेसिटी की संभावना बढ़ जाती है। सही ढंग से आराम न मिलने और सुकून की नींद लेने के समय भी स्क्रीन पर कंटेंट देखते रहने से याददाश्त भी कमजोर होती है। किसी भी काम में फोकस करने की क्षमता घटती है। उलझी-बिखरे से रूटीन में क्रोध, स्ट्रेस और अजीबो-गरीब ढंग से मूड का बदलना परेशानियों को बढ़ाता जाता है। ध्यान रहे कि सोने के समय की अवधि और गहरी नींद शरीर के लिए स्वयं अपनी संभाल-देखभाल करने का समय होता है। हमारी बांडी खुद की रिपेयर करती है। अगले दिन की भाग-दौड़ के लिए मन-मस्तिष्क और शरीर तैयार होते हैं।

खुद करें हैबिट कंट्रोल

आवश्यकता से अधिक इस्तेमाल की गई कोई भी चीज नुकसानदेह ही होती है। तकनीक के मामले में भी यह बात लागू होती है। वर्चुअल व्यस्तता के इस दौर में स्क्रीन स्क्रॉलिंग को हैबिट बना लेने, डिजिटल डिवाइसेस पर हद से ज्यादा निर्भर हो जाने के कई खामियाज भुगतने पड़ते हैं। खासतौर पर नींद की कमी की वजह से मेटल और फिजिकल हेल्थ को बहुत नुकसान होता है। इस हैबिट की वजह से हर उम्र के लोगों में शारीरिक व्याधियां और मनोवैज्ञानिक समस्याएं देखने को मिल रही हैं। वयस्क लोग तमाम व्याधियों के शिकार हो रहे हैं तो बच्चे भी ऑनलाइन गेम्स के जाल में फंस रहे हैं। उम्र के हर पड़ाव पर अनिद्रा और बेचैनी लोगों के मन-मस्तिष्क को घेर रही है। यूके के फॉलगुड कॉन्वेंट के आंकड़ों के मुताबिक भारत में स्क्रीन टाइम की बढ़ती हुई और गंभीर की कमजोरी में भी गहरा संबंध देखा जा रहा है। आंखों की रोशनी कम होने और गंभीर खराब होने की शिकायत के मामले में भारत दुनिया की सूची में सबसे पहले स्थान पर है। करीब 27.5 करोड़ भारतीय यानी हमारी आबादी का करीब 23 प्रतिशत, बहुत ज्यादा स्क्रीन टाइम की वजह से गंभीर की कमजोरी से जूझ रहा है।



सुकून से और सही समय तक सोना हमारी इम्यूनिटी को बढ़ाता है। ऐसे में अपनी सेहत बचाने और दिनचर्या साधने के लिए सोते समय स्मार्ट गैजेट्स से दूरी बना लेना ही सही है। अगले दिन की स्फूर्ति भरी शुरुआत के लिए सोने के पहले का टाइम अपनाओ से संवाद, किताब पढ़ने या मेडिटेशन में लगाएं। दिन में भी जब समय मिले स्मार्टफोन और लैपटॉप में बिजी रहने के बजाय योगाभ्यास करना फायदेमंद होता है।

डब्ल्यूएचओ ने किया आगाह

डब्ल्यूएचओ ने भी डिजिटल एडिक्शन से पूरी दुनिया के लोगों को आगाह किया है, क्योंकि हद से ज्यादा ऑनलाइन एक्टिविटीज और इंटरनेट का उपयोग दिन में टाइम मैनेजमेंट, ऊर्जा को सही दिशा देने और फोकस रहने में असमर्थता और रात में नींद का पैटर्न बिगाड़ने या इनसोमनिया पैदा करने का कारण बनता है। ऐसे में जरूरी है कि डिजिटल होती जीवनशैली में तकनीक से मिली सुविधाएं अनुशासित होकर इस्तेमाल की जाएं। मनोरंजन, सूचनाएं, शिक्षा, काम-काज या सोशल मीडिया मंचों पर मौजूदगी, हर मामले में स्क्रीन की दुनिया से जुड़ते हुए संतुलन साधा जाए। तकनीक से घिरी आज की जिंदगी में कम से कम अपने बेडरूम को स्क्रीन-फ्री ज़ोन जरूर बनाएं। याद रहे कि अपने लिए यह सीमा हमें खुद ही तय करनी है। *

चौकीदार अम्मा

एक बिल्डर के यहां चौकीदारी करने वाली बूढ़ी अम्मा का एक बेटा तो था, लेकिन वह उनसे अलग रहता था। हालांकि कहने को अम्मा जी की देख-भाल करने वाले बहुत से अपने लोग थे, लेकिन सच यही था, वह एक पीड़ा के साथ अपनी जिंदगी जी रही थी। एक मार्मिक कहानी।



अम्मा के वहां पहुंचते ही बच्चों की भीड़ उनको घेर लेती। अम्मा उन्हें कभी परियों की कहानी सुनाती तो कभी भक्त प्रह्लाद, ध्रुव, राम, कृष्ण, बाल गणेश की कथाएं सुनाती तो कभी झांसी की रानी, दुर्गावती, भगत सिंह, गांधी, सुभाष, की जीवन गाथा सुनाती। कई बार बच्चों को भी ताजुब होता था कि लोग तो कहते हैं कि अम्मा पढ़ी-लिखी नहीं हैं फिर भी इनको इतना ज्ञान कैसे है? अम्मा कॉलोनी के बच्चों की बेस्ट फ्रेंड की तरह थीं।

उनकी एक ही आवाज में बच्चे इकट्ठे हो जाते थे। कई बार तो कॉलोनी की औरतें अम्मा से कहतीं, 'अम्मा जी, आपने पता नहीं क्या जादू कर रखा है बच्चों पर, ये हमारा तो कहना ही नहीं मानते और आपकी हर बात खुशी-खुशी मानते हैं। कुछ महिलाएं तो अम्मा से अपने बच्चों की शिकायत करतीं, 'अम्मा आपका लाडला जब देखों तब पिज्जा, बर्गर, मोमोज ही खाने की जिद करता है, अब आप ही इसे समझाइए।' फिर अम्मा बड़े प्यार से बच्चों को समझातीं, 'देखो बच्चो, तुम पिज्जा, बर्गर और मोमो खाओगे तो कैसे स्वस्थ रहोगे। तुम्हें तो हरी सब्जी, फल, दूध और घर का ही बना खाना चाहिए। पौष्टिक खाना खाओ, खूब खेलो और खूब पढ़ो। अपनी अम्मा की बात मानोगे तो मजे से रहोगे।' ये सुनते ही बच्चे समवेत स्वर में बोलते, 'जरूर मानेंगे।'

अगर एक दिन भी अम्मा रात को पार्क में नहीं पहुंचतीं तो बच्चे उनको बुलाने उनके कमरे में पहुंच जाते। किसी दिन अम्मा जरा भी बीमार हो जातीं तो कोई बच्चा उनके लिए दवाई, तो कोई चाय, दूध और खाना लेकर पहुंच जाता। बच्चों का इतना प्यार देख कर अम्मा की आंखों में भी आंसू आ जाते। उन्हें अपने बेटे की याद

सोशल मीडिया पर बढ़ रही प्रोफाइल लॉकिंग की टेंडेंसी

कुछ समय पहले तक सोशल मीडिया को ओपेन ग्लोबल डिजिटल प्लेटफॉर्म माना जाता था। लेकिन अब अनेक वजहों से लोगों में अपनी प्रोफाइल लॉक करने का ट्रेंड बढ़ रहा है। इस ट्रेंड के बढ़ने की क्या वजहें हैं? इस सोशल मीडिया ट्रेंड पर एक नजर।

टेक्नोटेंड

नरेंद्र शर्मा



आजकल सोशल मीडिया में अपनी प्रोफाइल लॉक करने का ट्रेंड बढ़ रहा है। पहले आमतौर पर महिलाएं ही अपनी प्रोफाइल लॉक करके रखती थीं, लेकिन अब बहुत तेजी से यह प्रवृत्ति पुरुषों में भी बढ़ी है। सवाल है, एक ओपेन प्लेटफॉर्म के तौर पर जिस सोशल मीडिया का आगाज हुआ था, अचानक बीते एक-दो सालों में ऐसा क्या हुआ है कि जिससे देखो वही अपनी प्रोफाइल लॉक किए दे रहा है? सोशल मीडिया में प्राइवेंसी को लेकर इस कदर सजगता बढ़ने की वजह क्या है? क्या यह कोई साइकोलॉजिकल सिंड्रोम है या कोई नई पैदा हुई ऐसी इमोशनल इनसिक्योरिटी है, जो अबके पहले इस स्तर पर नहीं थी?

वजहें हैं कई: अगर इस ट्रेंड पर गहराई से सोचें तो यह बिना किसी मकसद के घट रही घटना नहीं है बल्कि इसके पीछे कई किस्म के सामाजिक, मनोवैज्ञानिक और डिजिटल सुरक्षा से जुड़े कारण जिम्मेदार हैं। भले इसे साइकोलॉजिकल सिंड्रोम कहना सही न हो, लेकिन

इस प्रवृत्ति में भावनात्मक असुरक्षा, प्राइवेंसी की बढ़ती चिंता जैसी कई बातें शामिल हैं। इनके अलावा साइबर क्राइम, फेक प्रोफाइल और डेटा चोरी से जुड़ी चिंताएं भी हैं। आजकल डीपफेक और फोटो मॉर्फिंग जैसे मामलों में भी तेजी से वृद्धि देखी जा रही है। अनजान लोगों द्वारा प्रोफाइल तस्वीरों का गलत इस्तेमाल, डिजिटल स्टॉकिंग और साइबरबुलिंग का भी डर है। ये सब ऐसे कारण हैं, जिसकी वजह से कई लोग सोशल मीडिया पर अब अपनी निजी जिंदगी को ज्यादा एक्सपोज करने से बच रहे हैं। इनके प्रोफाइल लॉक करने से ये संकेत मिलते हैं कि वे केवल करीबी लोगों के बीच ही सीमित रहना चाहते हैं।

लोग चाहते हैं डिजिटल डिटॉक्स: लोगों में बढ़ते इस ट्रेंड की एक वजह डिजिटल डिटॉक्स और मानसिक शांति की चाहत भी है। ऐसे लोग अपनी ओपेन प्रोफाइल रखकर बार-बार लाइक्स, कमेंट्स और स्टोरीज के रिप्लेशन पर ध्यान देने की बजाय अपनी डिजिटल मौजूदगी को सीमित कर रहे हैं। कुछ लोगों के मुताबिक इसकी एक वजह सोशल मीडिया का बदलता पैटर्न भी है। पहले लोग खुली प्रोफाइल रखते थे, ताकि ज्यादा से ज्यादा लोग उनकी पोस्ट देखें। लेकिन अब ट्रेंड बदल गया है और 'एक्सक्लूसिविटी' बढ़ रही है। लोग अब यह दर्शाना चाहते हैं कि वे हर किसी के लिए उपलब्ध नहीं हैं। इससे एक अलग तरह की सोशल स्टेटस सिग्नलिंग होती है कि 'मैं केवल अपने करीबी लोगों के लिए हूँ।' डिजिटल प्राइवेंसी को लेकर बढ़ी एलर्नस:

मनोवैज्ञानिकों के मुताबिक इस प्रवृत्ति में एक किस्म की 'फियर ऑफ मिसिंग आउट' साइकोलाजी भी छिपी है। जब लोग देखते हैं कि उनके ज्यादातर दोस्त या जानने वाले अपनी प्रोफाइल लॉक कर रहे हैं, तो वे भी ऐसा करने लगते हैं। यह एक तरह की 'डिजिटल हर्ड मेंटैलिटी' है। लोगों को लगता है कि अगर वे अपनी प्रोफाइल ओपेन रखेंगे तो वे अलग नजर आएंगे या उनकी डिजिटल सुरक्षा खतरे में पड़ सकती है। यह एक साइको सिंड्रोम से कहीं ज्यादा सामाजिक प्रवृत्ति और डिजिटल सुरक्षा की बढ़ती जागरूकता का संकेत है। हालांकि इसमें भावनात्मक असुरक्षा और सोशल मीडिया की बदली हुई डायनामिक्स का भी बड़ा योगदान है। यह दर्शाता है कि लोग अब अपनी डिजिटल प्राइवेंसी और ऑनलाइन पहचान को लेकर ज्यादा सतर्क हो रहे हैं। कह सकते हैं कि यह एक सोशल ट्रेंड और डिजिटल सिक्वोरिटी की बढ़ती एलर्नस का संकेत है। साथ ही

अब अपनी डिजिटल प्राइवेंसी और ऑनलाइन पहचान को लेकर कहीं ज्यादा एलर्न हो रहे हैं।

मॉनिटरिंग-ट्रैकिंग भी है जिम्मेदार: सोशल मीडिया पर प्रोफाइल लॉक करने के पीछे विभिन्न देशों की सरकारों द्वारा सोशल मीडिया पर की जाने वाली

मॉनिटरिंग और ट्रैकिंग का भी असर है। सोशल मीडिया पर 'संदिग्ध' या 'एंटी-नेशनल' कंटेंट पोस्ट करने वालों को ट्रैक किया जाता है, इसके कारण भी लोगों को बहुत डर लगने लगा है कि अगर किसी ने उनके एकाउंट को हैक कर मिसयूज किया तो वे फंस सकते हैं। इस कारण आम लोग भी अब बहुत सतर्क हो गए हैं और अपनी प्रोफाइल लॉक करके रखना सही समझते हैं। कई लोग 'डिजिटल लिंकिंग' से बचने के लिए अपनी प्रोफाइल लॉक कर देते हैं ताकि कोई उनके पुराने पोस्ट न खोज सके। कुछ बैंकिंग और वित्तीय कारण भी हैं, क्योंकि आधार, बैंक एकाउंट, सरकारी सिब्सडी आदि से जुड़ी जानकारी लीक होने का डर तेजी से बढ़ रहा है।

उभर रहा डिजिटल अंडरग्राउंड: इस बढ़ते ट्रेंड की वजह से लगता है, जैसे धीरे-धीरे सोशल मीडिया, ओपेन से क्लोजेड स्पेस की ओर बढ़ रहा है। ज्यादा से ज्यादा लोग प्राइवेट ग्रुप्स, टैगल ग्रुप्स और एनक्रिप्टेड चैट्स का इस्तेमाल कर रहे हैं। लॉक प्रोफाइल एक नए डिजिटल अंडरग्राउंड की तरह उभर रही है। डिजिटल अंडरग्राउंड यानी, एक ऐसी ऑनलाइन दुनिया, जो मुख्यधारा के खुले इंटरनेट से कटकर निजी, हिडेन और प्रोटेक्टेड प्लेटफॉर्म पर शिफ्ट हो रही है। *

आ जाती। एक दिन पता चला कि बिल्डर के प्रोजेक्ट का काम पूरा होने वाला है। कॉलोनी में सभी को चिंता थी कि काम पूरा होते ही बिल्डर के दूसरे प्रोजेक्ट की साइट पर अम्मा भी यहां से चली जाएंगी।

अम्मा के बिना तो कॉलोनी ही सूनी हो जाएगी। उनके बच्चों को जो संस्कार, प्यार, अपनापन मिल रहा है, वो अम्मा के जाने के बाद कहां मिल पाएगा।

गर्मियों के दिन थे। सुबह का वक्त था। अचानक ही चक्कर खाकर चौकीदार अम्मा बिल्डिंग की सीढ़ियों से गिर गईं। बिल्डर ने तुरंत उनको हॉस्पिटल पहुंचाया। अम्मा के हाथ में फ्रेक्चर था। बिल्डर के साथ-साथ कॉलोनी के सभी बच्चों के परिवार वालों ने भी उनके इलाज में कोई कमी नहीं रखी। जब तक अम्मा आईसीयू में रहीं, तब तक कॉलोनी के सारे बच्चे शिव मंदिर में भगवान से उनके ठीक होने की मन्नत मानते रहे। अम्मा के ठीक होने पर बच्चों की टोली अम्मा से मिलने हॉस्पिटल पहुंच गई। नींद में उनके मुंह से कई बार अमर शब्द सुनकर डॉक्टर ने पूछा, 'यह अमर कौन है?'

किसी ने बताया कि उनका बेटा है। डॉक्टर ने एक बार उन्हें बुलाने को कहा। कॉलोनी के बच्चों ने बिल्डर से पूछ कर अम्मा के बेटे अमर का पता लगाया। वे उसके पास गए। उन्होंने अम्मा के हॉस्पिटल में एडमिट होने के बारे में बताया, उससे रिवेस्ट की, वह अम्मा के पास चलें। छोटे-छोटे बच्चों के आग्रह ने अमर दिखाया। अमर सोचने लगा कि छोटे-छोटे पराए बच्चों को भी कुछ ही समय में मां ने प्यार से अपना बना लिया है। एक वह है, बाबूजी के जाने के बाद मां ने मेहनत, मजदूरी करके उसे पढ़ाया-लिखाया, अपने पैरों पर खड़ा किया। अपनी शादी की, शादी के बाद वह स्वार्थ में इतना अंधा हो गया कि अपने फर्ज को भूल गया। अपनी गलती पर अमर मन ही मन में बहुत शर्मिदा था।

अमर की पत्नी ने अमर से कहा, 'देर मत करो। अम्मा जी के पास चलो।' अमर पत्नी और अपने बेटे बंटी के साथ हॉस्पिटल गया। अम्मा ने जब उनको देखा तो वह खुशी से रो पड़ीं। बेटे, बहू ने अम्मा से माफी मांगी। अम्मा ने उनको गले लगा लिया। बेटे के साथ अपने पोते बंटी को देखते ही उनकी आधी बीमारी तो ठीक हो गई। हॉस्पिटल से छुट्टी मिलते ही अमर अम्मा को अपने साथ ले गया। सबकी आंखों में आंसू थे।

जो काम बरसों तक अम्मा खुद नहीं कर पाईं, वो छोटे-छोटे बच्चों ने कर दिखाया। कॉलोनी से जाते वक्त अम्मा के हाथ में ढेर सारे गिफ्ट थे, जो बच्चों ने मिलकर अपनी प्यारी अम्मा को दिए थे। जाते-जाते बच्चों ने अम्मा से रिटर्न गिफ्ट में एक प्रॉमिस लिखा कि वह हर रविवार को उनसे मिलने जरूर आएगी। अम्मा के चले जाने के बाद कॉलोनी सूनी वीरान-सी हो गई, लेकिन वो बच्चों से मिलने रविवार के दिन पार्क में आतीं। तब पूरी कॉलोनी अम्मा की कहानियों के बोल के साथ, बच्चों के ठहाकों से गूंज उठती थी। *

कैनकुन अंडरवाटर म्यूजियम मैक्सिको

कैनकुन (मैक्सिको) के आस-पास समुद्र तल में वर्ष 2009 में तैयार किए गए इस म्यूजियम 'म्यूजियो सबकोटिको दे आटे' यानी मूसा नाम से भी जाना जाता है। इसके पीछे कलाकार जेसन डिकलेयर टेलर की सोच है। उन्होंने यहां प्रदर्शित 500 मूर्तियों को आर्टिफिशियल रीफ की मदद से बनाया है। यह न सिर्फ देखने में अद्भुत है, बल्कि समुद्री जीवन के लिए एक नया इकोसिस्टम भी बनाती है। इन मूर्तियों ने समुद्र तल को एक अद्भुत दृश्य में बदल दिया है, जिसे देखने पर ऐसा लगता है मानो मनुष्य और प्रकृति आपस में घनिष्ठता से जुड़े हों। यहां आने वाले लोग ग्लास बॉटम बोट्स, स्नोर्कलिंग या स्नूबा डाइविंग के जरिए इसे देख सकते हैं। *



अमेजिंग / रजनी अरोड़ा

म्यूजियम, सभ्यताओं के विकास, इतिहास, कला-संस्कृति के संरक्षण के केंद्रस्थल होते हैं। आज इंटरनेशनल म्यूजियम-डे के अवसर पर, दुनिया भर में मौजूद करीब 38 हजार म्यूजियम्स में से अपनी तरह के कुछ अनोखे म्यूजियम्स के बारे में यहां बता रहे हैं।



जिस तरह हर कंपनी का समय-समय पर ऑडिट करके उसकी प्रोग्रेस को एनालाइज किया जाता है, उसी तरह हमें अपनी लाइफ का भी ऑडिट करते रहना चाहिए। इसका क्या प्रोसेस है और इससे क्या फायदे होते हैं, आप जरूर जानना चाहेंगे।



म्यूजियम ऑफ ब्रोकेन रिलेशनशिप क्रोएशिया

इस म्यूजियम का कॉन्सेप्ट है-टूटे हुए रिश्ते की कहानी बयां करना। क्रोएशिया की राजधानी जाग्रैव में स्थित इस म्यूजियम में दुनिया भर के लोगों द्वारा दान की गई उन वस्तुओं (अंगूठी, कपड़े, उपहार) का कलेक्शन है, जो उनके टूटे हुए रिश्तों की यादगार हैं। हर वस्तु के साथ एक नोट लिखा हुआ है, जिसमें उस वस्तु और उससे जुड़े किस्से का विवरण दिया गया है। माना जाता है कि ऐसा करने से उन्हें अपने बिखरे हुए मन को हल्का करने का मौका मिलता है। *

ये हैं दुनिया के अनोखे म्यूजियम



वेंट हेवन म्यूजियम अमेरिका

अमेरिका के केंटकी में स्थित इस म्यूजियम को डमी (पुतलों) म्यूजियम के नाम से भी जाना जाता है। विलियम शेक्सपीयर बर्जर ने 1910 में टॉमी बेलॉनी नामक आर्टिस्ट की पहली डमी खरीदी थी। 1962 में डमीज के कलेक्शन को रखने के लिए म्यूजियम बनाया गया। इस म्यूजियम में 800 से ज्यादा डमियों, तस्वीरों, प्लेविल्स, किताबों का कलेक्शन है। हर साल यहां एक कॉन्फ्रेंस भी आयोजित की जाती है, जिसमें शामिल होने दुनिया भर के विशेषज्ञ आते हैं। *



म्यूजियम ऑफ ह्यूमन डिजीज ऑस्ट्रेलिया

यह एक पैथोलॉजिकल म्यूजियम है। यहां तकरीबन दो हजार मानव शरीर के विभिन्न अंगों और ह्यूमन टिशूज को प्रिजर्व किया गया है। इन्हें मनुष्य के ब्रेन डेड की स्थिति में या पोस्टमार्टम के दौरान ऑपरेशन करके इकट्ठा किया गया है। यहां रखे गए मानवांगों का अपना इतिहास है, जिनमें कुछ सौ साल से भी ज्यादा पुराने हैं। इनका इस्तेमाल कई बीमारियों के लिए रिसर्च करने के लिए किया जाता है। पर्यटकों को यहां अच्छी लाइफस्टाइल के बारे में काफी जानकारी मिलती है। यहां मेंटल हेल्थ, स्मॉकिंग-एल्कोहल, ड्रग जैसे विषयों पर समय-समय पर प्रदर्शनी भी लगाई जाती है। *

इंटरनेशनल स्पाई म्यूजियम अमेरिका

वाशिंगटन में स्थित यह म्यूजियम जासूसी की कलाकृतियों का दुनिया में सबसे बड़ा संग्रह है। यहां जासूसी प्रोफेशन के इतिहास, तकनीकों, छोटे कैमरे, स्पाई गैजेट्स, कोड ब्रेकर मशीन जैसे उपकरणों, हथियारों को प्रदर्शित किया गया है। ये मानव की सोचने-समझने की क्षमता और जासूसों की भूमिका को दर्शाती हैं। यहां पर्यटक जासूसी एडवेंचर्स में हिस्सा लेकर दुनिया भर के जासूसी फोटो, वीडियो और कहानियों के बारे में जान सकते हैं। *



द डॉग कॉलर म्यूजियम इंग्लैंड

इस म्यूजियम की स्थापना के पीछे लीथ कैसल की मालकिन लेडी बेली का डॉग्स के प्रति प्रेम रहा है। इस म्यूजियम में दुनिया के अद्भुत डॉग्स कॉलर देखने को मिलते हैं। यहां 130 से ज्यादा दुर्लभ और मूल्यवान डॉग्स कॉलर प्रदर्शित किए गए हैं, जिन्हें आयरिश स्कॉलर जॉन हंट और उनकी वाइफ ने एकत्रित किया था। शाही हीरे जड़े कॉलर से लेकर पांच शताब्दियों पुराने सबसे छोटे, सबसे फेशनेबल बो टाई तक यहां रखे गए हैं। यह म्यूजियम इंसान और डॉग के रिश्ते के विकास को भी दर्शाता है। *



चाय को दुनिया में सबसे ज्यादा पसंद किया जाने वाला पेय माना जाता है। अंतरराष्ट्रीय चाय दिवस (21 मई) के अवसर पर जानिए, अपने देश में मिलने वाली अलग-अलग फ्लेवर्स की चाय के बारे में।

ऊर्जा-ताजगी से कर दें सराबोर ये जायकेदार लाजवाब चाय



बिरयानी चाय, आगरा

रोचक

शिखर चंद जैन

अगर आप चाय के शौकीन हैं तो सामान्य चाय, मसाला चाय, ब्लैक टी और ग्रीन टी तो अक्सर पीते ही होंगे। लेकिन यहां हम आपको इनसे इतर अपने देश के अलग-अलग स्थानों की पॉपुलर चाय के बारे में बता रहे हैं।

तड़के वाली चाय, अमृतसर: पंजाब के लोग तड़के और मक्खन के खास शौकीन होते हैं। इस खास चाय को बनाने के लिए पिस्ता, बादाम, दालचीनी, इलायची, खसखस, गुलाब आदि को बटर में फ्राई किया जाता है और फिर इसे चाय में ऊपर से डाल दिया जाता है। अब आप अनुमान लगा सकते हैं

अलग, नमकीन होता है।

बिरयानी चाय, आगरा: आगरा में तीन परतों वाली यह चाय बेहद खास मौकों पर मेहमानों को पिलाई जाती है। इसमें सबसे नीचे गाढ़ा दूध, बीच में रहती है ब्लैक टी, जो चक्र फूल और दालचीनी पावडर के साथ उबाली जाती है और सबसे ऊपर झाग वाला गाढ़ा-गाढ़ा दूध होता है। इसे पीकर तन ही नहीं मन भी नई ऊर्जा से भर उठता है।

गुलाबी चाय, लखनऊ: इस जायकेदार चाय को बनाने के लिए बेकिंग सोडा में चाय पत्तियों को देर तक उबाला जाता है। जब पत्तियां पूरी तरह अपना रंग छोड़ देती हैं तो फिर इन्हें दालचीनी, इलायची, तेजपत्ता, केवड़ा, लौंग, केसर और दूध के साथ उबालते हैं। पक कर तैयार होने के बाद ऊपर से रबड़ी और बादाम डाले जाते हैं। धीमी - धीमी

पकी हुई इस लखनवी गुलाबी चाय को पीकर आप ऊर्जा से सराबोर हो जाएंगे।

लेबू चाय, कोलकाता: इस चाय को बनाने के लिए चाय पत्ती को पहले अच्छी तरह खीलाते हैं फिर इसे छानकर इसमें नींबू का रस, काला नमक, जीरा पावडर, काली मिर्च आदि डालकर सर्व करते हैं। इसमें दालचीनी, लौंग भी डाली जा सकती है।

तंदूरी चाय, दिल्ली: पंजाब और दिल्ली में तंदूरी चाय का खूब प्रचलन है। दूध में चायपत्ती, इलायची, पुदीना आदि मिलाकर पहले चाय बनाई जाती है। फिर एक गर्म तंदूर में कुल्हड़ को बेहद गर्म होने के बाद इसे चाय में डुबाकर चाय निकाली जाती है या फिर ऐसे तपते कुल्हड़ों में ही चाय डाल दी जाती है। मिट्टी के कुल्हड़ की सोंधी-सोंधी खुशबू और अनूठे स्वाद वाली यह चाय तन-मन को ताजगी से भर देती है। *



कि इस खास पंजाबी तड़के वाली चाय में क्या शानदार स्वाद आता होगा।

गुड़-गुड़ चाय, लद्दाख: गुड़-गुड़ चाय एक स्मॉकी ब्रिक टी है। यह खास तिब्बती पेमागुल चायपत्ती, नमक, याक के दूध और इसी दूध से बने मक्खन से बनती है। इस चाय से यहां मेहमानों का खास स्वागत किया जाता है। मलाईदार गुड़-गुड़ चाय का स्वाद अन्य चाय से एकदम



भय और आतंक के पर्याय फिल्मों के यादगार खलनायक

शुरुआती दौर से ही हिंदी फिल्मों में नायक-नायिकाओं की तरह खलनायकों का भी महत्व रहा है। कई कलाकारों ने बतौर विलेन भरपूर प्रसिद्धि हासिल की। यहां आपको कुछ ऐसे ही यादगार विलेन कैरेक्टर्स के बारे में बता रहे हैं, जिन्हें दर्शक फिल्मी पर्दे पर भय और आतंक का पर्याय मानते हैं।

बड़ा पर्दा / अशोक जोशी

जिस तरह अतीत से लेकर आज तक देश-दुनिया में कई बार भीमत्स आतंकी घटनाएं घटित होती रहती हैं। समाज में कुछ अपराधी, भयावह घटनाओं को अंजाम देते हैं, उसी तरह हमारी फिल्मों में भी कुछ खलनायकों के चरित्र को इस तरह गढ़ा गया, जो यादगार बन गए। इनके पर्दे पर आते ही दर्शकों के मन-मस्तिष्क में भय और आतंक छा जाता है। हिंदी फिल्मों के ऐसे ही कुछ यादगार निगेटिव किरदारों पर एक नजर-

शुरुआती फिल्मों के खलनायक



बी.एम. व्यास

हीरालाल और हबीब जैसे कलाकारों को महारथ हासिल थी।

ऐतिहासिक फिल्मों के खलनायक

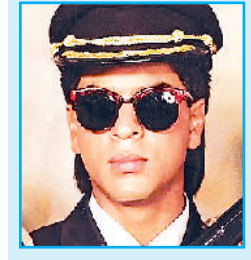
पौराणिक फिल्मों के बाद ऐतिहासिक फिल्मों का दौर आया, जिसमें चंगेज खां, हलाकू जैसे खतरनाक सनकी ऐतिहासिक पात्र पर्दे पर प्रस्तुत किए गए। इन किरदारों को पर्दे पर निभाकर कभी प्रेमानाथ, कभी शेष मुखार तो कभी प्राण दर्शकों में खौफ पैदा कर देते थे।

प्राण का यादगार किरदार राका

आगे चलकर ऐसे कई कलाकार आए, जिन्होंने नए-नए तरीके अपनाकर फिल्मी पर्दे पर आतंक और भय का वातावरण रचने में योगदान दिया। 'जिस देश में गंगा बहती है' का राका ऐसा ही खुंखार डाकू था, जो दुल्हनो के गले से आभूषण खींचते समय यह परवाह तक नहीं करता था कि इससे गला कट कर दुल्हन डोली पर चढ़ने के बजाय अर्थी पर चढ़ जाती है। प्राण ने अपने अभिनय कौशल से इस वरहशी डाकू के किरदार में जान डाल दी थी।

हमेशा रहेंगे याद गम्बर, मोगैबो, शाकाल

सिनेमा के पर्दे पर हिंसा और सनकी कलाकृति 'शोले' के



साक्षी में नाना पाटेकर और 'दरार' में अरबाज खान ने ऐसे पति की भूमिका निभाई, जो सनक की सारी हद्दें पार कर जाता है।

में शाकाल बात-बात में लोगों को मगरमच्छ की खुराक बना देता है। शाकाल का किरदार, इस भूमिका को निभाने वाले एक्टर कुलभूषण खरबंदा की पहचान से जुड़ गया था।

ये किरदार भी हैं यादगार

'हम', 'चातक', 'क्रांतिवीर', धुंध जैसी फिल्मों में भय, आतंक और सनकी कैरेक्टर्स का रोल डैनी डेजोंगपा ने निभाया। आशुतोष राणा ने फिल्म 'संचर्ष' में लज्जा शंकर पांडे बनकर दर्शकों को खूब डराया तो 'दुश्मन' में उन्होंने गोकुल पंडित के किरदार में भरपूर वाहवाही बटोरी। इन दोनों फिल्मों में आशुतोष राणा ने सनकीपन और वरहशीपन को पर्दे पर कुछ इस तरह पेश किया कि दर्शक आज भी इनकी नहीं भूल पाए हैं। 'चाइना गेट' में मुकेश तिवारी द्वारा निभाया गया जंगीरा का किरदार भी एक अलग किस्म का भय का माहौल



मुकेश तिवारी



रचता है। गुलशन ग्रोवर भी तरह-तरह के गेटअप बदल कर 'बैडमैन' के चरित्र को पर्दे पर पेश कर सनक का सिलसिला आगे बढ़ाते रहे हैं। अजय देवगन ने फिल्म 'दीवानगी' में शातिर और सनकी तंरंग भारद्वाज का किरदार निभाया था। 'रमन राघव' में नवाजुद्दीन सिद्दीकी ने साइको किलर की बेहतरीन भूमिका निभाई तो 'एक विलेन' में सनकी प्रेमी और हत्यारे की भूमिका में रितेश देशमुख ने जान डाल दी थी। 'पद्मावत' में रणवीर सिंह, अलाउद्दीन खिलजी के किरदार में बेहद खतरनाक लगे। हाल में आई कुछ फिल्मों की बात करें तो बांबी देओल ने 'एनिमल' में और 'छावा' में अक्षय खन्ना ने अपने निभाए किरदारों के माध्यम से भय का माहौल रचा। *

पीछे नहीं रहीं खलनायिकाएं

ऐसी बात नहीं कि पर्दे पर सनकी या साइको किलर के किरदार निभाने में केवल मेला एक्टर्स का ही एकाधिकार रहा है। कई फी-मेल एक्ट्रेस ने भी इस तरह के किरदारों को बखूबी निभाकर दर्शकों को हैरत में डाल दिया। 'गुप्त' में काजोल और 'कौन' में उर्मिला मातोंडकर द्वारा निभाए गए किरदारों ने दर्शकों को अचंभे में डाल दिया था।

